चन्दामामा
जून १९९०

अपनी श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट पेंसिलें

हर एक के लिए, सबके लिए

National-358 HIN

MAGGI CLUBBERS
FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
लॉज़ ऑफ़ दि जंगल गेम
स्नैप सफ़ारी गेम
मैगी क्लब:आओ मनाएं
जंगल में मंगल!
अपने उपहार मुफ़्त लो!
मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले हिस्से
से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के
मुफ़्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों
में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक
उपहार मिल जाएगा.
यह मत भूलो :
अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो
हमें लिखते समय अपने मनचाहे उपहार
के नाम के साथ अपना नाम और पता
ज़रूर लिखना. और यदि तुम पहले से
मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपना
मेम्बरशिप नम्बर भी
साथ भेजना.
डिज़्नी टुडे कॉमिक
फ़ॉरेस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क
जंगल स्टैन्डीज़ सेट
MAGGI
2-minute noodles
हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055
और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!
HTA 6679 HIN

हमारे यहाँ दावत है, तुम्हारा आना ज़रूरी है!

ज़रूरी क्यों?

तुम ही तो दावत हो!

मम्मी से कहो, २०० ग्रामवाला सिबाका टूथपेस्ट ले आयें. उसके अंदर तुम पाओगे एक नन्हा-मुन्ना जानवर!

Trikaya Grey HCG.8.90 HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

सूखता जा रहा है महासागर

दुनिया के बड़े-बड़े सागरों में छठा स्थान प्राप्त एक महासागर अब और बीस सालों में, यानी — २०१० तक सूख जाएगा पूरा का पूरा, यूँ कहे अगर कोई तो क्या आप विश्वास कर पाएँगे? आप चाहे यकीन करें या नहीं, यह तो है हक़ीक़त । चूँकि, रूस का अरल सागर आज तक सूख ही जा चुका है तीन चौथा भाग । आख़िर पिछले तीस वर्षों में इस महान सागर का पानी कैसे बदल चुका था इस कदर दलदल और रेत में?

इस सागर में ख़ासकर अमुदार्या और सिरदार्या नामक दो नदियों का पानी आकर पहिले समा जाता था । इन नदियों का पानी खेतीबाड़ी के लिए इस्तेमाल करने के मक़सद से, बहाव की दिशा बदलकर इन्हें मध्य ऐशिया के रेगिस्तानों में ले जा चुके थे । उस वक़्त किसी के मन में यह विचार नहीं आया कि ऐसा करने से एक महासागर ही सूख जाएगा । अब मध्य एशिया के खेतों में कपास का उत्पादन हो रहा है इन्हीं नदियों के पानी से, अतएव अब इन नदियों का रुख बदला भी नहीं जा सकता ।

फिलहाल रूस में आयी नवोदित ओजपूर्ण नेतागिरी के शासन में विश्व के विशेज्ञों की सहायता से ऐसी कोई कार्रवाई हो जाए जिस से अरल सागर के पानी को सूखने से रोका जा सके, यूँ हम विश्वास करेंगे ।

सूखता जानेवाला अरल सागर दुनिया के लिए एक चेतावनी जैसा है । प्रकृति के प्रतिकूल जब भी हम उठाएँ कोई कदम ऐसा,बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए हमें, ताकि काफ़ी सोचाविचारा गया हो वह।

वर्ष : ४२ जून १९९० अंक : १०.
एक प्रति : रु. ३/- वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

कश्मीर की समस्या सच और झूठ
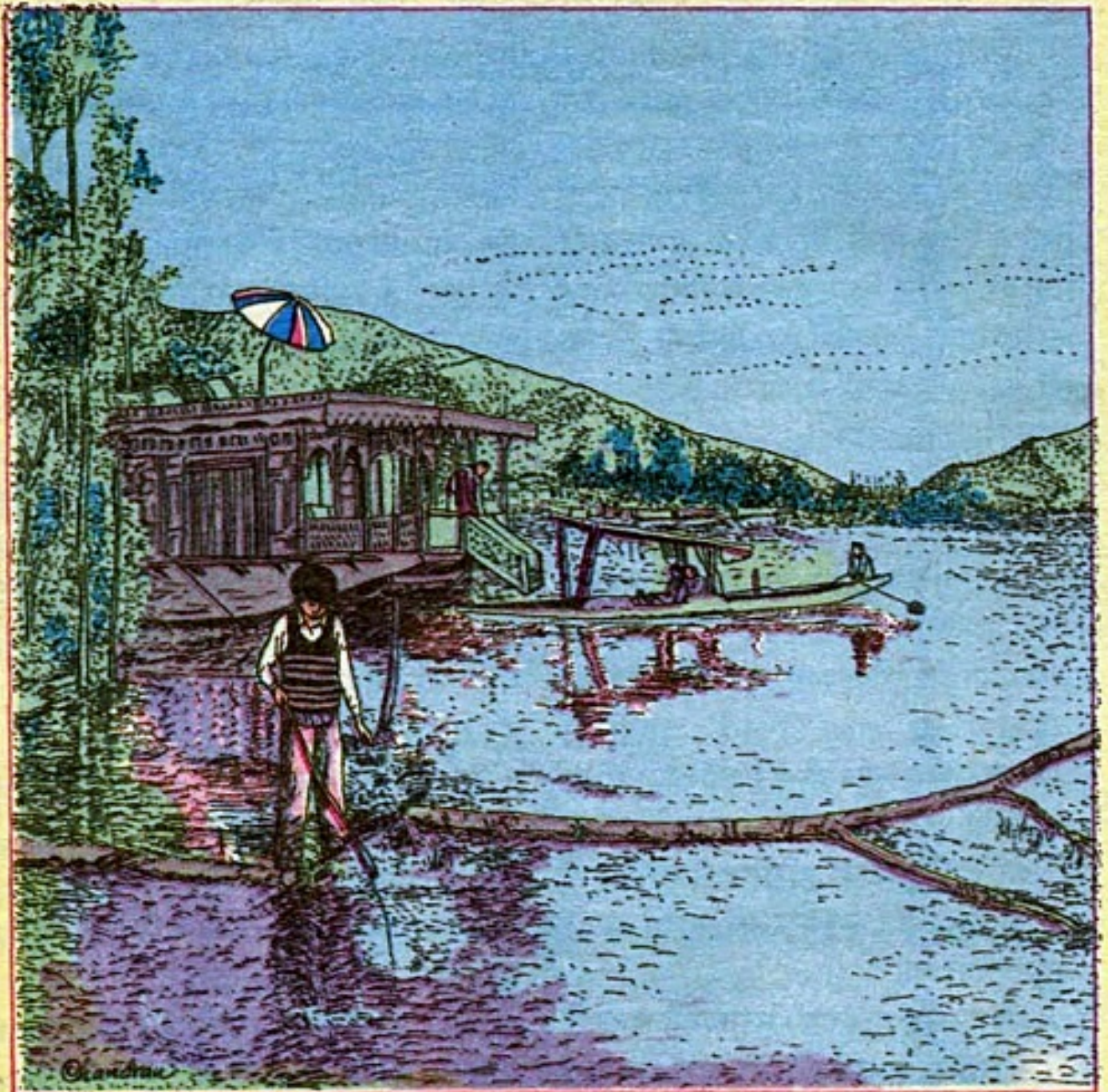
कश्यप मुनि के नाम पर कश्मीर का नाम पड़ा, यूँ हमारे पुराणों में ज़िक्र है ।

प्राचीन भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्य रहते थे जिन पर छोटे-मोटे राजाओं का रहता था शासन । अलग-अलग रहते हुए भी ये राज्य अभिन्न भारत के अंग माने जाते थे ।

भारत की आज़ादी की लड़ाई के आख़िरी सालों में मोहम्मद अली जिन्ना की नेतागिरी में 'मुसिलम लीग' ने माँग किया था मुसलमानों के लिए अलग मुल्क पूरी आज़ादी का। यह बात हर कोई जानता है कि उन दिनों हमारे देश के पालक रहे अंग्रेजों ने जिन्ना को उकसाया था इस कदर, जिस से वह जिद करे देश के विभाजन के लिए। उन दिनों ही अनेक मुसलमानी नेताओं ने सोचा कि मज़हब के नाम पर देश का विभाजन ठीक नहीं है। फिर भी, जिन्ना की जिद की वजह से भारत से अलग हो चुका था पाकिस्तान।

उन दिनों जम्मू-कश्मीर पर शासन करता था महाराजा सर हरिसिंह। वह इस दुविधा में पड़ गया कि उसे किस के पक्ष में जाना चाहिए। इसी वक़्त पाकिस्तान ने कुछ पहाड़ियों को कश्मीर पर हमले के लिए भड़काया था। कश्मीर की जनता में ज़्यादातर मुसलमान ही हैं जिन का नेता था उन दिनों शेक अब्दुल्ला। उस की सलाह के अनुसार महाराजा हरिसिंह ने आख़िर यूँ निर्णय लिया कि कश्मीर को भारत से ही जुड़ा रहना चाहिए।

उस के बाद भारत की सरकार ने सेनाओं को भेजकर, हमलावरों को वहाँ से भगा दिया था। लेकिन तब तक उन हमलावरों ने कश्मीर का थोड़ा-बहुत भूभाग कब्ज़े में ले लिया था। भारत अभी-अभी आज़ाद हुआ था और शांतिप्रिय देश था, अतः हमलावरों को भगाने के लिए युद्ध का रास्ता अपनाकर ख़ूनख़राबा करना नहीं चाहता था। चुनांचे, इस मामले पर निर्णय के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ के सुरक्षा परिषद से मांग किया था भारत ने।

इस आक्रांत प्रांत का नाम रखा था पाकिस्तान ने 'आज़ाद कश्मीर'। और फिलहाल यहाँ की हालत ऐसी बनी रही कि इस 'आज़ाद कश्मीर' के लोगों में, कश्मीर के विपरीत, अविद्या और ग़रीबी ही थी बहुत ज़्यादा।

यह बात स्पष्ट हुई कि मज़हब के आधार पर देश का विभाजन बेमतलब है। बंग्ला देश की जनता भी हैं मुसलमान ही, मगर अलग हो गये थे काफ़ी वक़्त पहिले वे पाकिस्तान से। पाकिस्तान की तुलना में हमारे देश में हैं अत्यधिक मुसलमान। मगर बहुत से लोगों का ध्यान नहीं जा रहा है इस हक़ीक़त पर।

बहुत से लोग आज कश्मीर के लोगों में बेकार की अनेक आशाएँ जगा रहे हैं, लोगों के अपहरण और कत्ल करने वाले आतंकवादियों और विभाजनपरस्तों को प्रशिक्षण-प्रबोध से प्रोत्साहन देकर राज्य में शांति का भंग कर रहे हैं, इस तरह वहाँ चहुंदिस उपद्रव मचा रहे हैं।

इसी वजह से आज कश्मीर की ऐसी हालत हो गई और यूँ अनेक मुसीबतों और समस्याओं का सामना करने की नौबत आ गयी।

दो भाई

सुमपुरी पर राजा कीर्तिसेन का शासन था। वह तो था महान वीर और प्रतापी राजा, फिर भी बड़ा ही शांतिप्रिय था। उस के शासन में जनता थी बड़ी सुखी। कीर्तिसेन की पत्नी थी प्रियंवदा जिसे माँ बनने का भाग्य नहीं मिला था। कई व्रत-पूजन कर चुकी थी प्रियंवदा। फिर भी उसकी कोख नहीं खुली, गोद नहीं भरा जिस से वह बहुत दुखी रहती थी हमेशा।

आख़िरकार खूब सोचा रानी प्रियंवदा ने, समझा-बुझाकर राजा को मजबूर किया दूसरी शादी के लिए। राजा कीर्तिसेन की दूसरी पत्नी बनी थी स्वयंप्रभा नामक राजकुमारी।

वक़्त गुज़रने लगा और माँ बन गई स्वयंप्रभा। आख़िर एक पुत्र को जन्म दिया उसने।

राजा हुआ बहुत ही खुश। राजकुमार का नाम रखा गया था विजय।

इस के कुछ समय बाद बड़ी रानी प्रियंवदा भी माँ बन गई, और उस ने भी एक पुत्र को जन्म दिया। उस बच्चे का नाम रखा गया था आदित्य।

वक़्त गुज़रने लगा। विजय और आदित्य बड़े हुए। गुरुकुल में रहकर दोनों भाई करने लगे विद्या का अध्ययन। सभी विद्याओं का दोनों ने अध्ययन किया। ख़ासकर क्षत्रियोचित सभी क्षात्र-विद्याओं में दोनों ने अपूर्व प्रतिभा हासिल की। विद्यापीठ में उनकी शिक्षा समाप्त हुई। गुरुजी के आशीर्वाद और अनुमति पाकर दोनों भाई निकले गुरुकुल से। पहुँचे राजधानी में विजय और आदित्य।

दोनों बेटों को देखकर राजा कीर्तिसेन बहुत खुश हुआ। अनेक विद्याओं में अपने दोनों पुत्रों ने जो प्रतिभा हासिल की, उसे देखकर

मोनिका ठाकुर

राजा की छाती फूल गई हर्ष से ।

राजा कीर्तिसेन बूढ़ा हो चुका था । अब राजा के सामने एक सवाल उठा बड़ी समस्या बनकर । वह था—दोनों राजकुमारों से किसे गद्दी पर बिठाया जाए? बड़ी रानी के पुत्र को राजा बनाना राज परिवार का दस्तूर रहा । मगर बड़ी रानी का पुत्र आदित्य छोटा था उम्र में, छोटी रानी के पत्र विजय की तुलना में । क्या किया जाए?

कीर्तिसेन की समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए । उन्हीं दिनों हिमगिरि राज्य का राजा सहस्राक्ष सुमपुरी पर चढ़ाई की तैयारियाँ कर रहा था । सहस्राक्ष बड़ा ताक़तवर था और कीर्तिसेन तो बूढ़ा हो चुका था, युद्ध करने की ताक़त उस में नहीं बची थी । कीर्तिसेन के दोनों बेटे बहादुर-ताक़तवर थे, मगर अभी उम्र के कच्चे थे ।

राजा सोचने लगा कि आख़िर अपने बेटों को इस हालत में युद्ध करने के लिए भेजना कहाँ तक लाज़िमी होगा ।

दोनों राजकुमारों को पता चला कि सहस्राक्ष चढ़ाई करने आ रहा है अपने राज्य पर । फौरन दोनों ने पिता से कहा कि खुद उस शत्रु राजा से लड़ने जाएंगे ।

कीर्तिसेन ने विजय और आदित्य से कहा, "बेटे, शत्रु सहस्राक्ष महान बलशाली है । उसे परास्त करना तुम आसान काम मत समझना ।"

इस बात पर विजय ने कहा, "पिताजी, आप के बेटे कायर और बुज़दिल नहीं हैं । आप की बातों से हम कदापि पीछे हटने वाले नहीं हैं ।"

"हाँ पिताजी, हम लड़ेंगे शत्रु से-चाहे मिले हमें जय या हम आ जाएँ मैदान में काम!" आदित्य ने कहा ।

राजा कीर्तिसेन ने शांत स्वर में कहा, "समस्या हल करने के लिए हमें शांति के साथ सावधानी से सोचना चाहिए, दिमाग़ लड़ाना चाहिए । देहबल सदा-सर्वादा साथ नहीं देता हमारा ।"

इस पर दोनों राजकुमार कुछ सोचते हुए हो गये थे चुप ।

उस दिन सायं समय में राजा कीर्तिसेन युद्ध के बारे में अपने पुत्रों से बातें कर रहा था ।

तभी एक द्वारपाल आया और कहा राजा से, "महाराज, आप के दर्शन के वास्ते मंत्रपाल नामक पंडित आया ।"

राजा ने द्वारपाल से कहा कि मंत्रपाल को भीतर आने दे । थोड़ी देर में मंत्रपाल वहाँ आया ।

दोनों राजकुमारों को देखा मंत्रपाल ने । फिर कहा, "विजयी भव!"

राजा कीर्तिसेन ने एक बार पंडित के प्रशांत चेहरे को देखा, फिर कहा उस से, "पंडित महाशय, महाबली शत्रु के साथ युद्ध के इस बुरे वक़्त पर आप की आशिशें हमें काफी धीरज बांध रही हैं ।"

इस बात पर मंत्रपाल के चेहरे पर गंभीरता छायी ।

"महाराज, मैं शक्तिरूपिणी नामक एक मंत्र जानता हूँ । उस की सहायता से एक आदमी की ताक़त दूसरे आदमी में पहुँचा देना संभव होगा । ऐसा करने से वह दूसरा आदमी बेजोड़ ताक़तवर हो जाएगा । यह काम करने के लिए ताक़त देने वाले का राज़ी होना ज़रूरी है । साथ ही ऐसे दो आदमियों के बीच खून का रिश्ता होना भी ज़रूरी है । काम बन जाने के बाद दूसरे में पहुँचायी गयी ताक़त वापस पहले में लायी जा सकती है । इस मंत्री की सहायता से इस युद्ध में आप को अवश्य जीत मिलेगी ।" मंत्रपाल ने कहा ।

इस पर कीर्तिसेन ने मंत्रपाल से कहा, "पंडितजी, आप के मन में जो कुछ है, स्पष्टता से कहिए ।"

मंत्रपाल ने मीठी हँसी के साथ कहा, "युद्ध में आप के दोनों पुत्र सहस्राक्ष का सामना करें और लड़ें—यह तो क्षात्रधर्म नहीं कहलाता । है न? इस लिए कोई एक ही शत्रु से लड़ेगा । सहस्राक्ष बलशाली है । उसका सामना करने के लिए यदि एक ही राजकुमार में दोनों राजकुमारों की शक्ति हो, इस बारे में मैं सोच रहा हूँ । मेरे मंत्र से हो जाएगा यह मुमकिन । ऐसी हालत में, शत्रु के साथ यद्यपि लड़ता रहे एक ही राजकुमार, फिर भी उस में रहेगी दोनों राजकुमारों की ताक़त । इस से युद्ध में मिलेगी जीत आपको । साथ ही आप के पुत्र का बड़ा नाम होगा । इतना ही नहीं, आप के राज्य की प्रतिष्ठा इस से बढ़ जाएगी चौतरफ़ा ।"

काम ले तो बुरा नहीं होगा, धोखा नहीं कहलाएगा । हम जो करने जा रहे हैं वह है हिकमत-अमली, यानी राजा-महाराजा के लिए ज़रूरी राजनीति । राज्य की रक्षा करना फ़र्ज है हमारा । इस जिम्मेदारी को निभाने में हम जो कुछ करेंगे, वह तो कहलाएगा राजधर्म ।"

इस पर राजा कीर्तिसेन ने बड़े पुत्र से पूछा, "विजय, यदि तुम्हें अपना छोटा भाई अपनी शक्ति देने के लिए मान जाए तो शत्रु से युद्ध के लिए क्या तुम तैयार हो?"

विजय ने अपनी सम्मति प्रकट की । तब आदित्य ने कहा, "वीर-बहादुर लड़ाई में काम आने के लिए भी पीछे नहीं हटता, किंतु अपनी ताक़त खोने के लिए कदापि नहीं मानता ।"

इस तरह कहकर आदित्य ने कहा कि इस के लिए कोई दूसरा रास्ता ढूँढ निकालेंगे । तब मंत्रपाल बीच में आया और कहने लगा, "राजकुमार, बहस करने का नहीं है यह वक़्त! तुम दोनों में से कोई अपनी ताक़त अपने पिता को दें तो भी काम चल जाएगा, पिताजी अकेले ही शत्रु से लड़ेंगे ।"

विजय ने इस के लिए भी अपनी स्वीकृति प्रकट की । पर आदित्य इस के लिए भी सहमत नहीं हुआ । उसने आख़िर अपनी ताक़त विजय को देने के लिए ही स्वीकृति जतायी । पर इस के पहिले तनहाई में मंत्रपाल से बातचीत करने की इच्छा प्रकट की आदित्य ने ।

इस पर राजा कीर्तिसेन ने कहा, "पंडितजी, आप का विचार है बेहतरीन । वैसे ही करेंगे ।"

मगर इस काम के लिए आदित्य राज़ी नहीं हुआ । उस ने कहा, "ऐसा करना कहलाएगा धोखा-दगा । इस तरह छल-कपट से शत्रु पर जीत पाने की सोचना वीर-बहादुर को नहीं सुहाता । विजय की ताक़त भी लेकर सहस्राक्ष पर जीत पाना मैं पसंद नहीं करता । ऐसा करने से जो नाम आएगा, उस से मुझे खुशी नहीं मिलती ।" इस तरह कहते वक़्त आदित्य की आवाज़ में जोश-खरोश और हिद्दत देखने को मिली ।

विजय ने शांत स्वर में कहा, "आदित्य, आफ़त के वक़्त कोई हिकमत से

मंत्रपाल और आदित्य तनहाई में बातचीत करके आये । फिर मंत्रपाल ने आदित्य की शक्ति अपने मंत्रों के सहारे विजय में पहुँचा दी । इस पर विजय चल दिया सहस्राक्ष से युद्ध करने । युद्ध में विजय ने सहस्राक्ष को परास्त किया । विजय ने जो साहस-बहादुरी दिखाई, उस की हर मुँह से प्रशंसा मिली ।

युद्ध में जीत पाकर विजय वापस आया । फिर आदित्य की शक्ति उसे लौटाने के लिए राजा ने मंत्रपाल को ख़बर भेजी । मगर इस का पता नहीं चला कि आख़िर मंत्रपाल चल दिया था कहाँ ।

कीर्तिसेन ने काफ़ी सोच-समझ के बाद आदित्य को राजगद्दी पर बिठाने का निर्णय लिया । इस के बारे में सुनकर विजय ने अपने पिता से कहा, "पिताजी, शत्रु के साथ अकेले लड़कर मैंने जीत हासिल की । ऐसे मुझे नकारकर, आप आदित्य का राजतिलक मनाना चाहते हैं जिसे मैं कदापि मानूँगा नहीं । आप भूल रहे हैं कि अब आदित्य है शक्तिहीन और दुर्बल । फिर भी आप उसे ही राजा बनाना चाहें तो आदित्य और मेरे बीच होगा द्वंद्व युद्ध और जो भी होगा विजयी, वही राजतिलक का अधिकारी होगा ।"

विजय और आदित्य के बीच हुई तलवार की लड़ाई । उस लड़ाई में आदित्य दुर्बल सा नहीं रहा । फुर्ती से उस ने चलाई तलवार और विजय की तलवार को हवा में उछाल दिया, मिनटों में विजय को परास्त कर दिया था अदित्य ने । इस परिणाम पर विजय एकदम हो गया हैरान । उस की समझ में नहीं आया कि शक्तिहीन आदित्य में इतनी शक्ति आयी कहाँ से । लाचार होकर विजय ने मान ली अपनी हार और आदित्य को राजा बनने के लिए दे दी अपनी स्वीकृति ।

आदित्य का राजतिलक हो गया । सुमपुरी का वह राजा बन गया ।

कीर्तिसेन की छोटी रानी ने राजतिलक के बाद एक दिन पूछा अपने पति से "प्रभु, आप ने आदित्य को राजा बनाया और मेरे पुत्र विजय को इनकार किया । मगर इस पर मुझे जरा भी असंतोष नहीं रहा । डाह-ईर्ष्या की वजह से नहीं, सिर्फ कुतूहलवश मैं पूछ रही हूँ । शत्रु सहस्राक्ष को हराकर, राज्य की हिफ़ाज़त करने की हालत में भी अपनी शक्ति

विजय को देने के लिए आनन-फानन आदित्य ने स्वीकृति नहीं जतायी । मेरा पुत्र तो हर वक़्त हर काम के लिए अपनी सम्मति देता रहा । मंत्रपाल ने शक्तिरूपिणी मंत्र से आदित्य की ताक़त विजय में पहुँचा दी, फिर भी आदित्य दुर्बल न रहकर ताक़तवर कैसे रहा? वह कैसे विजय को द्वंद्व-युद्ध में हरा सका? इन सवालों का जवाब नहीं मिल रहा है मुझे । इस में कौन सा राज़ छुपा रहा, यह आप ही मुझे बताइए प्रभु ।"

इस पर कीर्तिसेन हँस पड़ा । उस ने कहा यूँ अपनी छोटी रानी से, "जो वीर-बहादुर होगा, उसे अपनी ताक़त पर ही विश्वास करना चाहिए—न कि मंत्र-तंत्र द्वारा मिलने वाली ताक़त पर । चूँकि हर वक़्त मंत्र-तंत्र की शक्ति से संपन्न महात्मा हमारी मदद करने के लिए नहीं आते । इसी लिए आदित्य ने कहा कि शत्रु को हराने के लिए कोई दूसरा राह अपनाना चाहिए । आख़िर अपनी ताक़त अपने बड़े भाई विजय को देने के लिए जब उस ने अपनी स्वीकृति दी, तब उस ने विवेक से काम लिया । इसी लिए उस ने पहले मंत्रपाल से बात करने की इच्छा प्रकट की ।"

इस तरह राजा ने कुछ और आगे बताना चाहा, मगर स्वयंप्रभा के सवाल पर उसे अपनी बात अधूरी छोड़नी पड़ी ।

स्वयंप्रभा ने राजा को पूरी बात सुनाने न दिया, पूछा यूँ, "मंत्रपाल का क्या हुआ? आदित्य ने मंत्रपाल से तनहाई में क्या-क्या बातें की होंगी?'—

इस पर कीर्तिसेन ने कहा, "आदित्य के मन में पहले ही शक हुआ कि विजय जब युद्ध में पाएगा जीत, तब उस की बुद्धि हो जाएगी खोटी । इसी लिए मंत्रपाल से तनहाई में मिलकर, युद्ध के बाद अपनी शक्ति वापस पाने के लिए आवश्यक मंत्र जान लिया होगा । यह बात यदि मालूम होती तो मंत्रपाल पर विजय बदला लेने के लिए उतरेगा, शायद मंत्रपाल को खतम करने की भी कोशिश करेगा । इसी लिए डर कर मंत्रपाल राज्य छोड़कर कहीं दूर प्रांत को चल दिया होगा ।"

इस बात पर स्वंयप्रभा हतप्रभ हुई और हुई इस तरह बात खतम ।

[९]

[पूर्व कथा: सत्यसेन अस्वस्थ था, यह जानकर उस के राज्य अमृतपुरी पर चढ़ाई करने का षड़यंत्र रचा था वीरसिंह ने । यह ख़बर जानकर सत्यसेन ने मंत्री को सलाह दी कि वीरसिंह से सुलह कर ले । वीरसिंह की सेनाएँ नावों में बैठकर जब सुधारा नदी को पार करने लगीं, तब अचानक नदी में बाढ़ आई और बहाव में सेनाएँ बह चलीं ।]

अचानक हुई इस दुर्घटना पर भौंचक रह गया था वीरसिंह और नदी के किनारे शिला प्रतिमा की तरह खड़ा का खड़ा रह गया था । डर और दहशत से नया सिपहसालार कपालकंठ कांपता रह गया, कुछ न बोल सका । जो सरदार जान बचाकर बाढ़ के बहाव से बाहर निकल सके, वे पानी में बहते जानेवाले हथियारों को समेटकर किनारे पर पहुँचाने लगे । लेकिन कई हथियार बाढ़ में बह गये ।

ऐसे कुछ हथियारों को नदी के उस पार रहे अमृतपुरी के सिपाहियों ने पकड़ लिया, किनारे पहुँचा दिए । वैसे ही बहते जानेवाले वीरसिंह के कुछ सिपाहियों को अमृतपुरी के सिपाहियों ने बचा लिया बाढ़ के पानी से बाहर खींचकर । फिर उन्हें युद्ध कैदियों सा जेल में बंद कर दिया ।

दूसरे दिन राजा सत्यसेन ने सेनाध्यक्ष और अन्य अधिकारियों को बुलवाया और कहा यूँ, "शत्रुओं से जो हथियार मिले, उन्हें साफ़

करके तैयार रखो । हमें युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए । हमें किसी की हमदर्दी नहीं चाहिए । चाहे हमारी सेना की ताक़त कम हो वीरसिंह की सेना की तुलना में, हम नहीं डरेंगे अब । इस बाढ़ में वीर सिंह की सेना के अनेक सिपाही मर चुके होंगे । इस से उस की सेना की ताक़त कमज़ोर पड़ी होगी । फिर अपनी सेना को मज़बूत बनाकर हम पर चढ़ाई करने आने के लिए उसे काफ़ी वक़्त लगेगा । इस बीच हमें भी अपनी ताकत बढ़ा लेनी चाहिए, युद्ध के लिए हमें हरदम तैयार रहना चाहिए । युद्ध कैदी बने वीरसिंह के सिपाहियों को अभी रिहा कर दो । उन के घर में बाल-बच्चे उन की प्रतीक्षा करते होंगे । हमें वीरसिंह से ताल्लुक है, उसी से है दुश्मनी । उसके पास काम करने वाले किसी पर हमें नाराज होने की जरूरत नहीं है । उन्हें अभी अपना देश भिजवा दो ।"

उस रात को मंत्री, सेनाध्यक्ष और दो दलनायक राजा सत्यसेन से मिले गुप्त वार्त्तलाप के लिए । उस वक़्त राजा से सेनाध्यक्ष ने कहा, "प्रभु! हमारे सिपाहियों ने बाढ़ से वीरसिंह के जिन सिपाहियों को बचाया था, उन में से कई शांतिपुर वापस जाना नहीं चाहते । आप इजाज़त दें तो वे सिपाही हमारी सेना में भर्ती होकर, हमारे देश की सेवा करने की इच्छा जता रहे हैं । हमें पता नहीं, वीरसिंह के यहाँ सेवा में काम करने के लिए वे क्यों अनिच्छा प्रकट कर रहे हैं । मगर इतना तो हम जान गये कि वे वीरसिंह को पसंद नहीं कर रहें हैं, उस की घृणा कर रहें हैं । आप ही बताइए । अब हमें क्या करना चाहिए?"

राजा ने थोड़ी देर सोचा और कहा, "जब वीरसिंह ने सुमेध राज्य के सिंहासन पर दुराक्रमण किया था, तब दुर्भाग्य से बीमार पड़ा हुआ था मैं, कुछ नहीं कर सका । मेरे दामाद, बेटी और पोते का क्या हुआ, इस का कोई पता नहीं चला । उनका पता लगाना चाहिए । अनेक लोगों की जानें लेने वाले युद्ध के पक्ष में नहीं हूँ मैं कभी भी, लेकिन लाचार हूँ । दुष्ट वीरसिंह युद्ध से भी तकलीफ़देह अनेक कष्ट दे रहा है सुमेध के भोलेभाले लोगों को । इस हालत में उसे रोकना हमारा दायित्व है । चुनांचे, वीरसिंह के जो भी सिपाही हमारी सेना में अपनी इच्छा से ख़ुद

भर्ती होना चाहता हो, तुरंत उसे हमारी सेना में कर दो दाख़िला, लेकिन सोच समझकर और अच्छी तरह परखकर!"

तब मंत्री ने कहा, "प्रभु, एक और ख़ुशख़बरी है। अभी अभी पता चला कि शांतिदेव महाराजा का वृद्ध मंत्री, वीरसिंह के हत्या-प्रयत्न से बचकर जिंदा ही रहा और वह अब हमारे ही राज्य में सुरक्षित है।"

"ऐसी बात? हम सब जानते हैं कि वृद्ध मंत्री है सुगुणशील बड़ा और विवेकी भी। अभी अभी मुझे इस बात का पता चला कि हत्यारों के चंगुल से बच पाने की ताक़त रखनेवाला साहसी भी है वह।" राजा ने ख़ुशी से कहा।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है प्रभु! वक़्त पर एक नक़ाबपोश वीर कहीं से चला आया घोड़े पर और बात की बात में वीरसिंह द्वारा नियुक्त हत्यारों का अंत कर दिया था उस ने। फिर उसी ने वृद्धमंत्री को भेज दिया था हमारे राज्य में। वृद्ध मंत्री के विचार के अनुसार वह नक़ाबपोश वीर तो और कोई नहीं..." यूँ आगे कुछ और बोलने को हुआ था अमृतपुरी का मंत्री।

मगर राजा जोश से पलंग पर से उठते हुए मंत्री से पूछने लगा, "कौन है वह नक़ाबपोश वीर? कहीं वही शांतिदेव तो नहीं? अभी किसी को भेजकर तुरंत वृद्ध मंत्री को बुलवा लें मेरे यहाँ, मैं इतना खुश हूँ कि अभी उस से बात करना चाहता हूँ।"

"हाँ, प्रभु! अभी बुलवाएँगे। एक और बात भी आप सुन लीजिए। वीरसिंह द्वारा सुनाई गई मौत की सजा से सुमेध राज्य के नागरिक रहे वसंत नामक नौजवान की उसी नक़ाबपोश वीर ने रक्षा की थी। राजा शांतिदेव के प्रति वसंत के मन में अटूट भक्ति और अपार गौरव की भावना हैं। दुष्ट वीरसिंह के पालन का अंत देखना चाहता है वह नौजवान वसंत, इस लिए छद्मवेश में वह सुमेध राज्य में घूमते-फिरते हुए वहाँ के नौजवानों को अपने पक्ष में ले रहा है। वीरसिंह के हमले के बारे में खबर हमें वसंत ने ही दी है प्रभु। इसी से पता चलता है कि वह हम पर कुछ आशाएँ बाँधकर रहा और वीरसिंह का अंत करने में हमारी मदद लेने वह ख़ुश होगा। यदि आप चाहते हों कि उसे

रही बात कि उन्हें किस तरह साथ दें हम । सुनिए, उन्हें किस प्रकार से हम मदद दें, यह आप तो जानते ही हैं न!"

"प्रभु, इस बात पर मैं खुश हूँ । अब मैं आप की आज्ञा के मुताबिक करूँगा कार्रवाई ।" कहा मंत्री ने । फिर राजा को नमस्कार करके मंत्री, सेनाध्यक्ष और दलनायक चल दिये वहाँ से ।

* * *

नदी के किनारे उदास खड़े वीरसिंह, कपालकंठ, सरदार और सिपाही वापस चले गये थे । अपार हानि हुई थी उस की सेना को । बहुत से हथियार भी बह चले थे बाढ़ के पानी के साथ । इस लिए वीरसिंह हुआ बड़ा दुखी । उस ने कपालकंठ को बुलवाकर कहा, "तुम बुद्धिहीन हो । सब के सब हो गये हो बेवकूफ़ । किसी ने क्यों नहीं दी चेतावनी इस बाढ़ के बारे में मूझे?"

"आम तौर पर इस ऋतु में बाढ़ का डर नहीं रहता है प्रभु! इसी लिए किसी ने इस के बारे में सोचा ही नहीं । हमारे दरबारी ज्योतिषी ने भी युद्ध के लिए रखा था यही मुहूर्त, पर बाढ़ की बात उस ज्योतिषी ने पहचानी नहीं ।" कपालकंठ ने कहा ।

"उस नाक़ाबिल ज्योतिषी को अभी फांसी पर चढ़ा दो । इस सारी दुर्घटना का जिम्मेदार वही है ।" वीरसिंह ने गुस्से के साथ ऊँची आवाज़ में कहा ।

"वह दिखाई नहीं दे रहा है प्रभु । जब

हम ज़रूर दें सहायता तो कहना होगा, यह विचार है सही । मगर, उसे हम किसी प्रकार सहायता दें, यह हमारी समझ में नहीं आ रहा है ।" मंत्री ने कहा ।

फिर थोड़ी देर सोचता रहा राजा सत्यसेन और कहा उस ने यूँ, "मंत्री जी, राजपरिवार का सत्यनाश करने पर उतरा था वीरसिंह, फिर भी हम ने दखल नहीं दिया सुमेध राज के मामलों में । इस पर क्या वह दुष्ट चुप रहा? उस नमकहराम ने हम पर भी हमला करने की कोशिश की । इस लिए अब उस दुष्ट वीरसिंह के पालन का अंत देखने के लिए कोशिश में रहे वसंत तथा उस के साथियों की मदद करना हमारा कर्तव्य है । हमें सही विचार ही आते हैं आप के जैसे, है न? अब

हमारी सेना नदी के किनारे पहुँची, तब वह सेना के पीछे ही था । पता नहीं कि बाढ़ में बह गया या जान बचाकर अमृतपुरी चला गया!" कपालकंठ ने कहा ।

"अमृतपुरी! अमृतपुरी! लगता है वह हमारे लिए बन जाएगा यमपुरी ।" गुस्से में पागल सा चीखने लगा वीरसिंह ।

"ऐसा मत कहिए प्रभु! हम ज़रूर जीत लेंगे अमृतपुरी को । साहसी नौजवानों को सेना में कर लेंगे दाख़िला, फिर से नए-नए हथियार जुटा लेंगे । फिर हम अविलंब जीत लेंगे अमृतपुरी को, तब तक ज़रा सब्र कीजिए प्रभु!" कपालकंठ ने कहा ।

"और कब तक करूँ सब्र? हथियारों को जुटाएँ कैसे?" निरीहता के साथ पूछा वीरसिंह ने ।

"अगर हमारे पास हो काफ़ी धन तो हथियार जुटाना कोई बड़ी बात नहीं है, दूर-दूर से भी मंगा सकते हैं । वैसे ही सेना भी बढ़ सकते हैं ।" कपालकंठ ने कहा ।

"वह तो सही है, मगर हमारे पास इतना धन भी नहीं है न? कुएँ खुदवाना, रास्ते लगवाना, विद्यालय तथा सराय बनवाना आदि कामों में शांतिदेव ने सारा खज़ाना खाली कर दिया था । अब हमें धन जुटाने के लिए क्या करना चाहिए?" दुख के साथ कहा वीरसिंह ने ।

"प्रभु, इस साल हमारे राज में फसलें अच्छी हुई । चन्द्रपुरी में धान के भाव अच्छे हैं, हमारे यहाँ के भाव से चार गुना ज़्यादा भाव
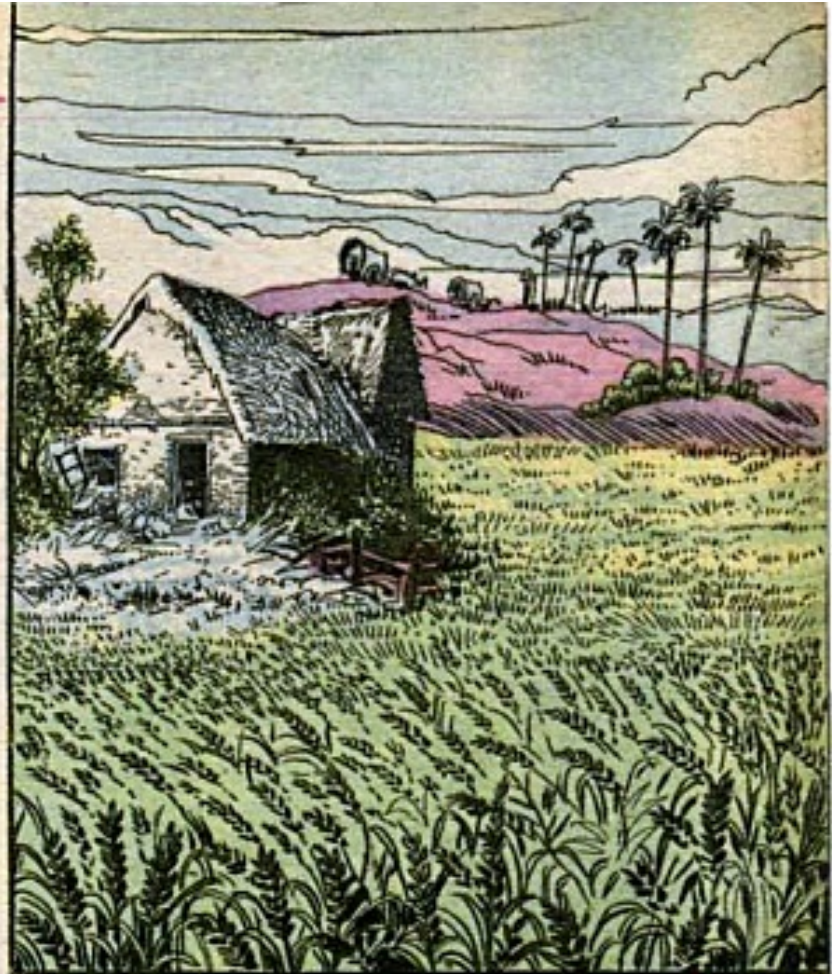
है वहाँ । ऐसे ही उस जगह के भाले अच्छे और मज़बूत होते हैं । हम अपने देश का धान वहाँ बेच देंगे और वहाँ के भाले खरीद लेंगे ।" कपालकंठ ने कहा ।

इस सलाह पर वीरसिंह हो गया बड़ा ख़ुश और कहा "ओह! कमाल की सलाह दी तुम ने कपालकंठ! हम किसानों की फसल से आधा और ज़मींदारों की फसल से तीन-चौथा वसूल कर लेंगे कर के रूप में । अभी मेरी आज्ञा की सूचना दिलवा दो लोगों को ।" वीरसिंह ने कहा ।

"हाँ, प्रभु! ऐसा ही करवा दूंगा । कर की वसूली पहले ज़मींदारों से कर देंगे । आज पहले हम ज़मींदार रघुनाथ के पास कर की वसूली के लिए भिजवा दूँगा कर्मचारियों

को ।" यूँ कहकर कपालकंठ बड़े जोश से चल दिया वहाँ से ।

रामपुर में रहनेवाला रघुनाथ नामक ज़मींदार धर्मवर्ती था । उस के अनेक खेत थे जहाँ काफ़ी धान पैदा होता था । रामपुर के गरीब लोग वक़्त पर रघुनाथ के पास आकर ले जाते थे आवश्यक अनाज और बाद में अनाज या उस का मूल्य अपनी सुविधा के साथ दे देते थे । इस तरह की प्रजासेवा रधुनाथ के पिता-पितामह के समय से ही चली आने वाली पुश्तैनी प्रथा थी ।

उस दिन दुपहर के वक़्त रघुनाथ के अनाज-भंडार के पास कई लोग टोकरे लेकर खड़े थे अनाज उधार में लेने । उसी वक़्त एक युवा राजकर्मचारी बीस सिपाहियों और पचास बैल गाड़ियों से वहाँ आ धमका । रोब के साथ कहा उस ने, "इस अनाज का तीन-चौथा भाग राजा को मिलना चाहिए ।"

"ऐसा क्यों?" रघुनाथ ने पूछा ।

"यह तो आप की ओर से चुकाने का कर है ।" उस युवा अधिकारी ने कहा ।

"मैंने कर चुका दिया था पूरा का पूरा । बकाया कुछ भी नहीं है मेरी ओर से ।" रघुनाथ ने कहा ।

"यह अतिरिक्त कर है । यह अनाज हमें चन्द्रपुरी में ले जाना है ।" उस अधिकारी ने कहा ।

"बात ऐसी है तो इसी अनाज के भरोसे पर रहे हमारे गाँव के लोगों का क्या होगा? अब वे कहाँ जाएँगे?" रघुनाथ ने पूछा ।

"इस अनाज के भरोसे पर रहने के लिए किस ने कहा था इन लोगों से? यह इन की बदक़िस्मती है ।" उस अधिकारी ने कहा ।

चाबुक से लोगों को डराते हुए उस ने कहा," चलो!जल्दी करो! अनाज को बोरों में भरकर , ज़ल्दी गाड़ियों पर लाद दो!"

"हमारे पेट मत मारो भय्या! हम पर करो रहम!" यूँ गाँव के लोग तो गिड़गिड़ाये, मगर कोई फ़ायदा नहीं हुआ । आख़िर लाचार होकर वे डरे-सहमे ज़ल्दी-ज़ल्दी करने लगे अनाज को बोरों में भरने का काम । इस तरह भरे बोरों को उन गाड़ियों पर लाद दिया गया । फिर गाड़ियाँ चल दीं पश्चिम की ओर । देहाती थोड़ी देर उन गड़ियों के पीछे चलने लगे तो उन्हें देखकर युवा
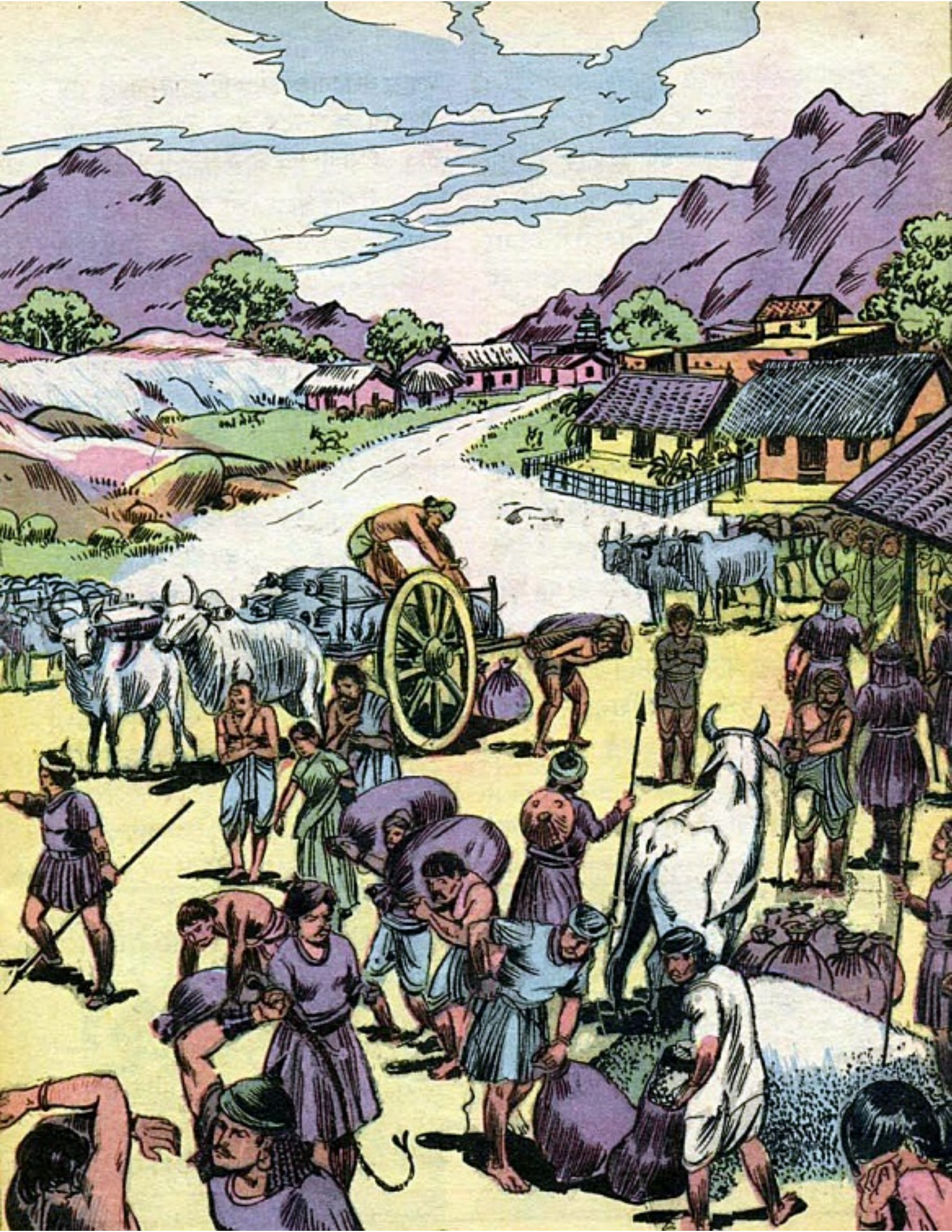
राजकर्मचारी मन ही मन ख़ुश होने लगा। लेकिन अचानक उस के मन में एक शक उठा। ये देहाती यूँ गड़ियों के पीछे क्यों चले आ रहे हैं? कहीं इन में कोई षडयंत्रकारी तो नहीं है न? इस लिए उस अधिकारी ने तलवार हवा में घुमाते हुए ज़ोर से कहा, "अब तुम चले जाओ पीछे! आगे मत बढ़ना!"

उस वक़्त गाड़ियाँ एक पहाड़ के पास से गुज़रते संकरे रास्ते से चल रही थीं। तभी देहातियों के भीड़ में से एक नौजवान ने जोर से कहा, "डालो!" दूसरे ही पल घोड़े पर रहे राजकर्मचारी के गले में पड़ गया एक फंदा जो पहाड़ पर फैले एक आदमकद पत्थर के पीछे से आया था। उस रस्सी के साथ ही वह युवा अधिकारी घोड़े से गिरकर घसीटता हुआ रास्ते पर चला आया। जिसने उस पर फंदा फेंका था, वह ज़ल्दी-ज़ल्दी शिला के पीछे से बाहर आया। उस के साथ कुछ और नौजवान भी थे।

उन नौजवानों ने युवा अधिकारी तथा सिपाहियों के हाथ बांध दिए और कहा उन से, "डरो मत, हम से तुम्हें कोई ख़तरा नहीं होगा।" फिर उन नौजवानों ने गड़ियों से अनाज के बोरे उतार दिए, देहातियों में बांट दिया वह अनाज। तब उन से कहा उन नौजवानों ने, "अब तुम डरो मत! वीरसिंह के आदमी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे, तुम बेफ़िक्र रहो। अपने-अपने घर चले जाओ!"

इस के बाद उस नौजवान ने अपने साथियों से कहा कि राजकर्मचारी और सिपाहियों को पेड़ों से बांध दिया जाए। इस के बाद पेड़ो से बंधे राजकर्मचारी से उस नौजवान ने कहा, "तुम्हारे नेता को हम सूचित कर देंगे कि तुम यहाँ पेड़ों से बंधे हो ताकि वह तुम्हें छुड़ाने का बंदोबस्त कर दे। तुम लोग बता दो कपालकंठ से कि इस राज्य से हम ले जाने न देंगे जबरन यहाँ का अनाज!" इस तरह उन्हें चेतावनी देने वाला वह साहसी नौजवान था वसंत।

(क्रमशः)

कला-कारबार

हठी विक्रम चल दिये फिर उस पेड़ के पास। लाश को उतारा पेड़ से और डाल लिया उसे अपने कंधे पर। फिर रोज़ की तरह लाश के भीतर से बैताल बोला, "राजन, मैं नहीं जानता किस चाहत से आप आधी रात इस तरह तकलीफ़ उठा रहे हैं। कुछ लोग जीवन भर कुछ पाने की इच्छा रखते हैं, मगर जब वह मिलने लगे तो लेने से इनकार कर देते हैं। अति प्रतीक्षित फल हाथ लगने पर उसे ठुकरा देते हैं। मुझे शक होता है, कहीं आप भी वैसे ही तो नहीं। कुछ वक़्त पहले नीलमपुर में एक कलाकार रहता था इस तरह का। मैं उस की कहानी सुनाऊँगा आप को ताकि थकान महसूस न पड़े। सुनिये।" फिर बैताल सुनाने लगा–

छोटा सा गाँव था नीलमपुर। उस गाँव में रहनेवाला मूर्तिकार रामदेव गरीब था। किसी ने कहा कि वह राजा के पास जाए तो उस के दिन सुधर जाएँगे। इस पर रामदेव

बैताल की कीथाएँ

निकला राजधानी को । रामदेव जैसे आदमी को राजा के दर्शन आम तौर पर नहीं मिलते । कोशिश करके आ चुका रामदेव । लाचार होकर वह लौट पड़ा अपने गाँव की ओर ।

रामदेव सचमुच एक अच्छा मूर्तिकार था । उस के हाथों से बनकर निकलती मूर्तियाँ बड़ी सुंदर लगती थीं । मगर उस गाँव में कला का पारखी या प्रशंसक कोई नहीं था । इस वजह से रामदेव की मूर्तियाँ बिकती नहीं थीं । बड़ी भयानक गरीबी से गुज़र रहा था श्रेष्ठ कलाकार रहकर भी मूर्तिकार रामदेव । इन्हीं दिनों दूर के किसी गाँव के मुखिये से उसे बुलावा मिला । रामदेव तुरंत उस मुखिये से मिला । रामदेव को देखकर मुखिये ने कहा, "देखो रामदेव, हाल ही मैं ने सुना कि तुम एक अच्छा मूर्तिकार हो और कुछ परेशानियों से गुज़र रहे हो । तुम मेरे वास्ते कुछ मूर्तियाँ बनाकर देते रहो, माहवार पचास मुहरें वेतन में लेते रहो ।"

रामदेव हँसकर बोला, "ऐसा ही करूँगा ।" मरता क्या नहीं करता?

अब रात-दिन काम करने लगा रामदेव । हमेशा सोचा करता था कुछ न कुछ । बना लेता था अनेक मूर्तियाँ । मुखिया उन मूर्तियों को आसपास के गाँवों में रईस लोगों को बेचकर खूब पैसा कमाने लगा । रामदेव की मूर्तियों का अच्छा प्रचार होने लगा ।

एक बार उस प्रांत के एक ज़मींदार ने रामदेव के बारे में सुना । उस के द्वारा बनायी गई मूर्तियाँ देखीं । फिर रामदेव को अपने पास बुलवाकर ज़मींदार ने कहा, "सुनो, तुम
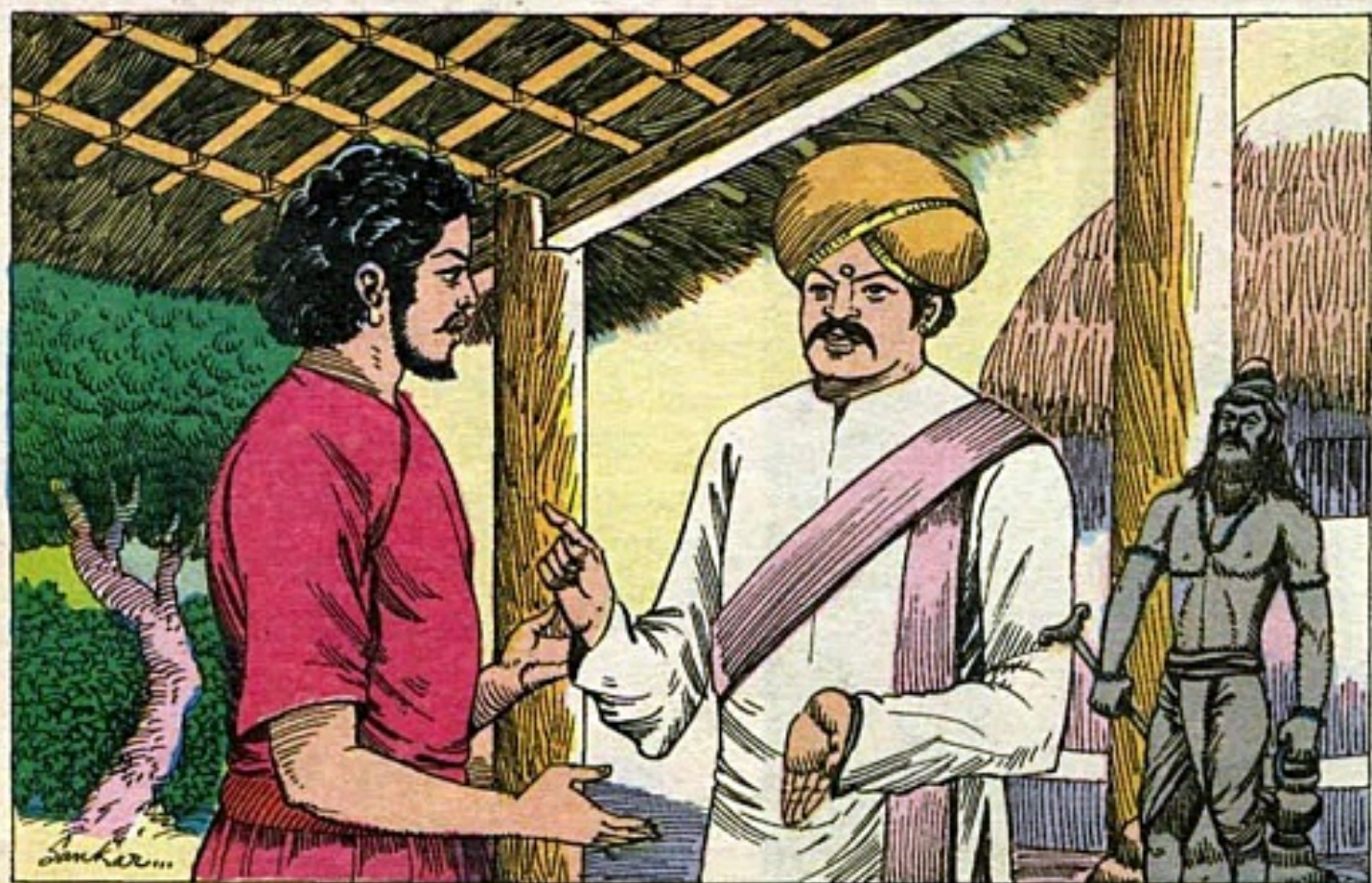
मेरे वास्ते मूर्तियाँ बनाते रहो । मैं तुम्हें सौ मुहरें माहवार वेतन देता रहूँगा ।"

रामदेव हँस दिया । इस के लिए दे दी स्वीकृति । अब रामदेव की बनाई मूर्तियाँ ज़मींदार के पास आने लगीं । मूर्तिकार का ध्यान हमेशा काम पर ही लगा रहता था । न वक़्त पर खाता था, न वक़्त पर सोता था । मूर्तियाँ बनाने में मूर्तिकार की जो लगन थी वो सचमुच थी बेजोड़ । उस के काम में था समर्पण । मूर्तिशाला से हमेशा आती थी आवाज़ । पलथी मारे हाथ में छेनी लिए किसी मूर्ति को तराशता दिखाई देता था हमेशा मूर्तिकार रामदेव ।

ज़मींदार के हाथों रामदेव की मूर्तियाँ अच्छे से अच्छे मूल्य पर बिक जाती थीं ।

एक दिन उस प्रांत के सामंत राजा को रामदेव के बारे में ख़बर मिली । सामंत राजा ने रामदेव को अपने पास बुलवा लिया और कहा, "देखो रामदेव, तुम्हारी मूर्तियाँ मुझे पसंद आयीं बहुत । तुम जो भी मूर्तियाँ बनाओगे, मेरे पास भेजते रहो । मैं तुम्हें एक हज़ार मुहरें हर माह दिलाया करूँगा ।"

रामदेव हँस दिया यह सुनकर । दे दी अपनी स्वीकृति । रामदेव की मूर्तियाँ जब बन कर हो जाती थीं तैयार, लगती थीं जीती-जागती सी सुंदर ।

इन मूर्तियों को सामंत राजा दोस्तों और साथी सामंतों को उपहार में भिजवाता था ।

एक बार सामंत राजा ने महसूल के साथ रामदेव के हाथों से बनी श्रेष्ठ मूर्तियाँ भी महाराजा के पास भेजीं उपहार में । उन मूर्तियों में जो कला-कौशल था उस पर

महाराजा हो गये थे मुग्ध । उस मूर्तिकार पर महाराजा के मन में श्रद्धा-प्रेम जागृत हुए । तुरंत महाराजा ने सोने की पालकी भिजवायी रामदेव को अपने पास ले आने के लिए ।

ठीक उसी वक्त संतोष नामक एक गरीब नौजवान रामदेव के पास आया, भक्ति के साथ रामदेव के पाँव छुए । फिर कहा संतोष ने, "मैं थोड़ी-थोड़ी मूर्तिकला जानता हूँ । मैं आप का एकलव्य जैसा शिष्य हूँ । बिना गुरु के कोई भी विद्या नहीं होती परिष्कृत । इसी विचार से आप के पास चला आया । मुझे अपना शिष्य बनाकर अनुग्रहीत करें ।"
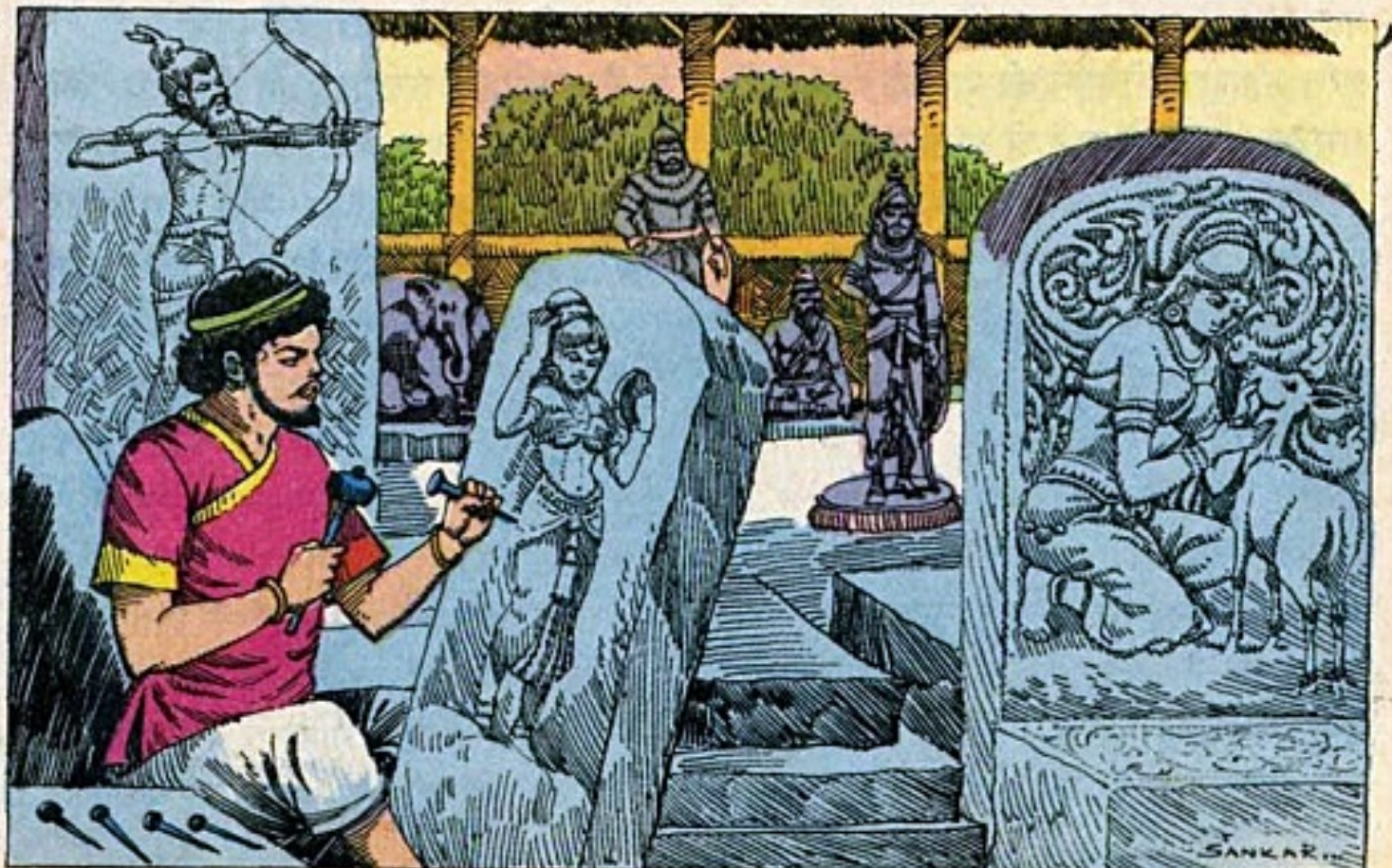
रामदेव ने कहा, "मैं अभी महाराजा के पास जा रहा हूँ । वहाँ से लौटने के बाद बात कर लेंगे ।" फिर वहाँ से रामदेव पहुँचा महाराजा के पास । महाराजा ने रामदेव से कहा, "देखो रामदेव, मैं तुम्हें दरबारी मूर्तिकार बनाना चाहता हूँ ।"

इस पर रामदेव ने कहा, "प्रभु! आप की सद्भावना के लिए मैं आप का बड़ा आभारी हूँ । आप क्षमा कीजिए मुझे महाराज, मैं अपना शेष जीवन अपने गाँव में बिताना चाहता हूँ ।"

महाराजा ने रामदेव की बात पर मंदहास करके कहा, "देखो महाशिल्पी, तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसे ही कर लो । मेरी ओर से पुरस्कार लेकर, मुझे संतोष देना ।" महाराजा ने बहुत सा धन पुरस्कार में रामदेव को दिया ।

राजा से जो धन मिला, उस की सहायता से रामदेव ने एक मूर्तिकला विद्यालय खोला । संतोष को पहला शिष्य बना लिया ।

बैताल ने इस तरह कहानी ख़तम करके यूँ कहा, "राजन, पार लगते ही बेड़ा जला देने वाला निकला था रामदेव । गाँव के मुखिये से लेकर सामंत तक मालिकों को बदलता रहा वह । क्या यह आत्याशा नहीं होती? पहले राजा के दर्शन करने चल दिया तो रामदेव को निराश होना पड़ा । राजा से मिले बिना ही लौटना पड़ा । इसी रामदेव को आख़िर राजा का दरबारी मूर्तिकार बनने का मौक़ा मिला था । मगर इसे इनकार कर दिया था रामदेव ने । क्यों किया था उस ने ऐसा? पहले दर्शन न पाने से जो अपमान महसूस हुआ था और जो दर्द दिल को लगा था, क्या इसी की वजह

से उस ने ऐसा किया? या दरबारी मूर्तिकार-पद की महानता समझ न पाए, इस मूर्खता की वजह से? इन संदेहों के समाधान जानकर भी अगर अनजान बनने की कोशिश करेंगे तो आप का सिर अनेक टुकड़ों में फट जाएगा ।"

इस पर विक्रम बोले, "बैताल, रामदेव न लालची था न घमंडी । बेवकूफ़ या बावला था ही नहीं, कम से कम नाम के पीछे होड़ लगाकर भागनेवाला भी नहीं था रामदेव । गाँव के मुखिये से लेकर महाराजा तक, जब रामदेव को बुलावे भेजने लगे तो वह जाने लगा उन के पास । मगर क्यों? इस आशा से कि वे पारखी बनें अपनी कला के, पहचान लें अपनी कला-पिपासा, फिर दिल से करें प्रशंसा । आशा उस की नहीं हुई पूरी, रह गई थी अधूरी । सब ने उस की कला से कोई प्रयोजन पाना चाहा । हर एक ने कला के साथ किया था कारबार । महाराजा ने भी रामदेव को, एक अच्छे मूर्तिकार के रूप में पहचान मिलने के बाद ही, अपने दरबारी मूर्तिकार बनाने की इच्छा प्रकट की । एक कलाकार को असली आनंद तभी मिलता है जब एक और कला-पारखी या कलाप्रेमी उस की कला निपुणता की प्रशंसा करे । इस तरह रामदेव की सिर्फ संतोष की बातों से ही संतोष मिला था । इसी पर, रामदेव जो अभी तक भूला-भटका सा घूम-फिर रहा था, आख़िरकार समझ गया कि ख़ुद को क्या करना चाहिए । एक कलाकार को, कुछ और कलाकारों को बनाने में अपूर्व संतोष और तृप्ति जरूर मिलेंगे, यह सच रामदेव ने पहचान लिया । फिर उसने मूर्तिकला का विद्यालय शुरू कर दिया । सही वक़्त पर राजा से पुरस्कार के रूप में काफ़ी धन मिला था, इस लिए यह विद्यालय खोलने में रामदेव को तकलीफ़ भी नहीं हुई ।"

इस तरह बताकर जब विक्रम चुप हुए, तो बैताल हुआ लाश के साथ ग़ायब और फिर से चढ़ गया पेड़ पर । (कल्पित)

बही खाता

सेठ राजीमल था बड़ा सूदखोर। सूद-बट्टे का रोज़गार था उस का जिसे बड़े पैमाने पर चला रहा था। उस के पास सूद-ब्याज की बहियाँ लिखता था हरीश नामक मुंशी। एक दिन हरीश को ज़मींदार ने बुलवाया और अच्छे-ख़ासे वेतन पर उसे दीवान का मुंशी बना दिया। इस वजह से हरीश ने मजबूरन सेठ राजीमल के यहाँ नौकरी छोड़ दी।

सेठ राजीमल के पास बही खाता लिखने के लिए कोई लायक़ मुहर्रिर नहीं मिला। इस वजह से सेठ को एक तरफ अपना रोज़गार देखना पड़ता था और दूसरी तरफ़ बही खाते भी लिखना पड़ता था। राजीमल को यह सब संभालना मुश्किल लगा।

उन्हीं दिनों राजीमल के पुराने मुहर्रिर हरीश ने चंदन और सोहन नामक दो नौजवानों को मुंशीगिरी के वास्ते राजीमल के पास भेजा।

सेठ ने उन दोनों को देखकर कहा, "मैं तुम दोनों को दो बहियाँ दूँगा। तुम दोनों ये बहियाँ अपने-अपने घर ले चलो और बड़ी बारीकी से इन बहियों की जाँच कर लो। कहीं मुझ से कोई भूलचूक हो गई तो जाँच-परख करके मुझे बता देना।"

इतना कहकर सेठ राजीमल एक कमरे में चल दिया।

फिर दो बहियों को लाकर चंदन और सोहन को उसने एक-एक बही दी। फिर कहा उन से सेठ राजीमल ने यूँ, "इन हिसाबों की तुम दोनों कर लो जाँच पड़ताल कल शाम तक, फिर ये बहियाँ मेरे सुपुर्द कर दो।"

चंदन और सोहन ने स्वीकारत्मक सिर हिला दिये। फिर बहियाँ लेकर वे दोनों वहाँ से चले गये।

फिर दूसरे दिन शाम को वे दोनों बहियाँ

पद्मा गोयल

लेकर राजीमल के पास चले आये ।

सेठ ने हल्की हंसी के साथ चंदन को देखा और पूछा, "मेरे हिसाब में अगर तुम ने कोई भूलचूक देखी तो बता दो ।"

चंदन ने सेठ की तरफ़ देखते हुए कहा, "वैसे तो हिसाब सब सही-सही निकले । मगर चार कर्जदारों के मामले में सूदी पर ब्याज आप ने कम लिया । भूल से होगा शायद, आपने पाँच लोगों से सूद ज़्यादा वसूल भी किया ।"

तब सेठ ने सोहन की तरफ़ मुख़ातिब होकर पूछा, "अब बताओ, अपने यहाँ की बही का क्या हाल हैं?"

"सेठजी, मैंने जो बही अपने साथ ले जाकर परखी उस में हिसाब सही-सही निकले हैं—सिर्फ तीन देनदारों को छोड़कर । उन तीनों के मामले में आप से एक भूल हुई ।" सोहन ने कहा ।

"मुझ से भूल हुई? क्या है वह भूल?" बड़े ही आश्चर्य के साथ पूछा सेठ राजीमल ने उस से ।

"आपने देनदारों से सूदी पर सूद कम वसूल किया ।" सोहन ने कहा ।

"अच्छा, ऐसी बात?" कहकर राजीमल हँस दिया । फिर उसने चंदन की ओर देखकर कहा, "देखो चंदन, तुम कहीं और जगह नौकरी की कोशिश करो । अगर कहीं भी तुम्हें नौकरी नहीं मिली तो कुछ दिन बाद आकर मुझ से मिलो । इस बीच मैं हरीश से भी बात कर लूंगा । बुरा मत मानना । अब तुम जा सकते हो ।" सेठ राजीमल ने कहा, जिस पर चंदन चुपचाप चला गया वहाँ से ।
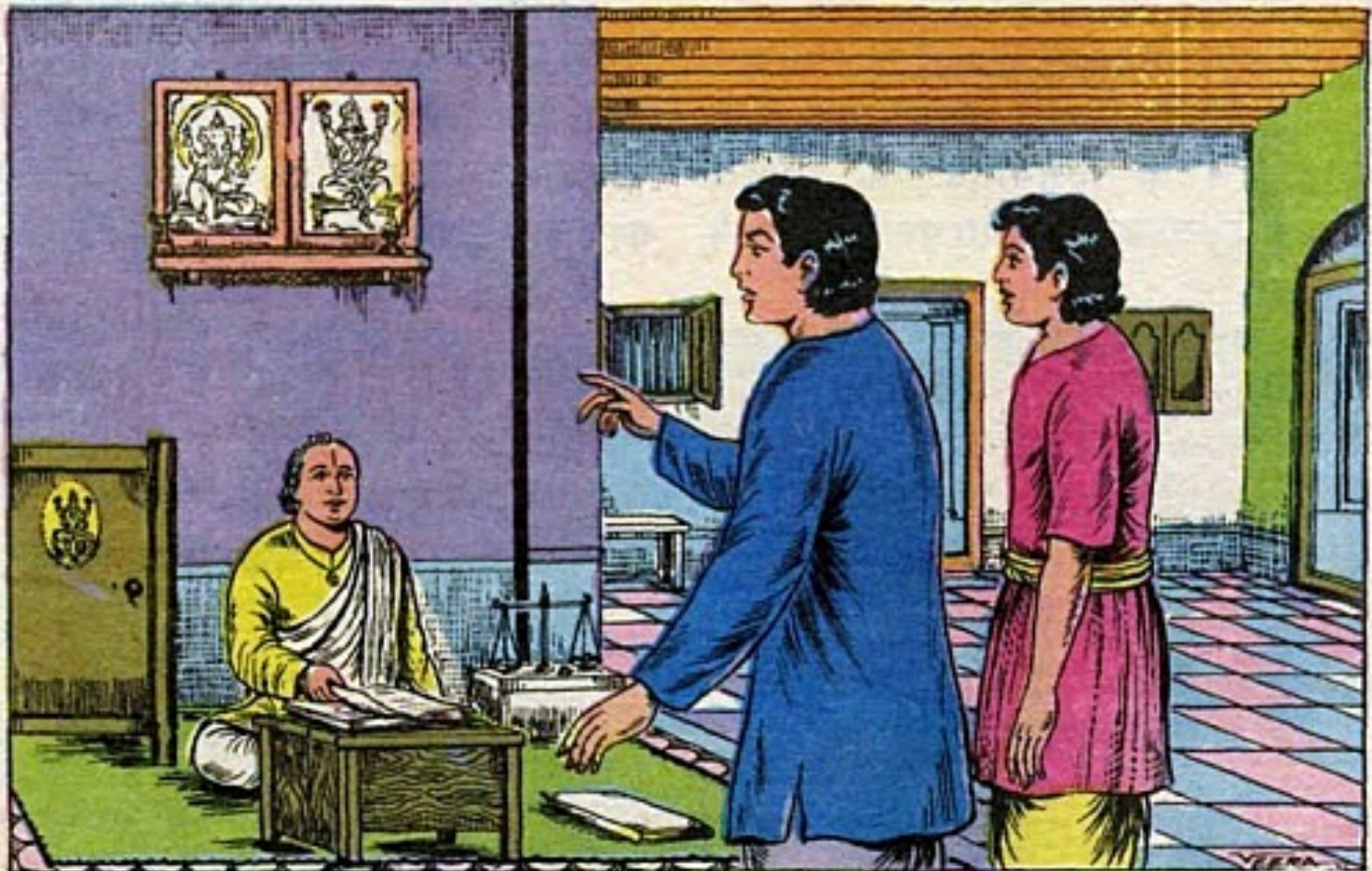
जब चंदन चला गया वहाँ से, सेठ ने पूछा सोहन से, "अच्छा, सूदी पर सूद कम वसूल किया मैं ने तीन कर्जदारों से । सही है तुम्हारी बात, मैं मानता हूँ । मगर, मैंने चार कर्जदारों से सूद ज़्यादा वसूल किया भी था और उन के हिसाब भी हैं उसी बही में । यह बात तुमने क्यों नहीं पहचानी?"

इस पर सोहन हँस दिया, फिर बोला, "सेठजी, भूल से यदि ज़्यादा ब्याज लिया गया तो इस से हमें घाटा नहीं उठाना पड़ता । फिर इस में फ़िक्र की बात ही कौन सी रहेगी? कर्जदार लगा लेंगे हिसाब घर जाकर और भूल पहचानते ही हमारे पास आ जाएँगे भूललेनी के लिए ।"

"यदि वे कर्जदार वह भूल पहचान नहीं पायें तो?" सेठ राजीमल ने पूछा ।

इस सवाल पर मुस्कराहट के साथ सोहन ने कहा, "सेठजी, देनदार हिसाब पाक करते वक़्त ज़रा भी असावधान नहीं रहता । हिसाब चुकता करने के लिए हमारे पास आने के पहिले ही हिसाब लगाकर आएगा । यदि सचमुच कोई कर्जदार वह ग़लती पहचानता नहीं तो भी क्या हुआ? जो सूद का ज़्यादा पैसा वसूल किया गया, वह हमारे फायदे में मिल जाएगा । इसी लिए वह भूल पहचानकर भी मैंने भूलचूक नहीं मानी ।"

"अच्छा । फिर मैंने जो सूद का पैसा कम वसूल किया, उस के बारे में तुम ने उंगली क्यों उठाई?" सेठ ने पूछा ।

"यदि हम ग़लती से सूदी पर ब्याज कम लेंगे तो नुकसान हम उठाएँगे । ऐसी हालत में बट्टे की रकम देनदार से वसूल करना आसान काम नहीं होगा । इसी लिए फौरन मैंने आप का ध्यान इस तरफ़ खींचा ।" सोहन ने कहा ।

इस उत्तर पर सेठ राजीमल खुश हुआ । उस ने सोहन की दिमाग़ी हिद्दत की तारीफ़ में कहा हंसते हुए, "अपने पुराने मुंशी के मुकाबले तुम कम नहीं हो जरा भी । कल से काम शुरू करना सोहन ।"

चन्दामामा परिशिष्ट-१९

हमारा ज्ञान भंडार
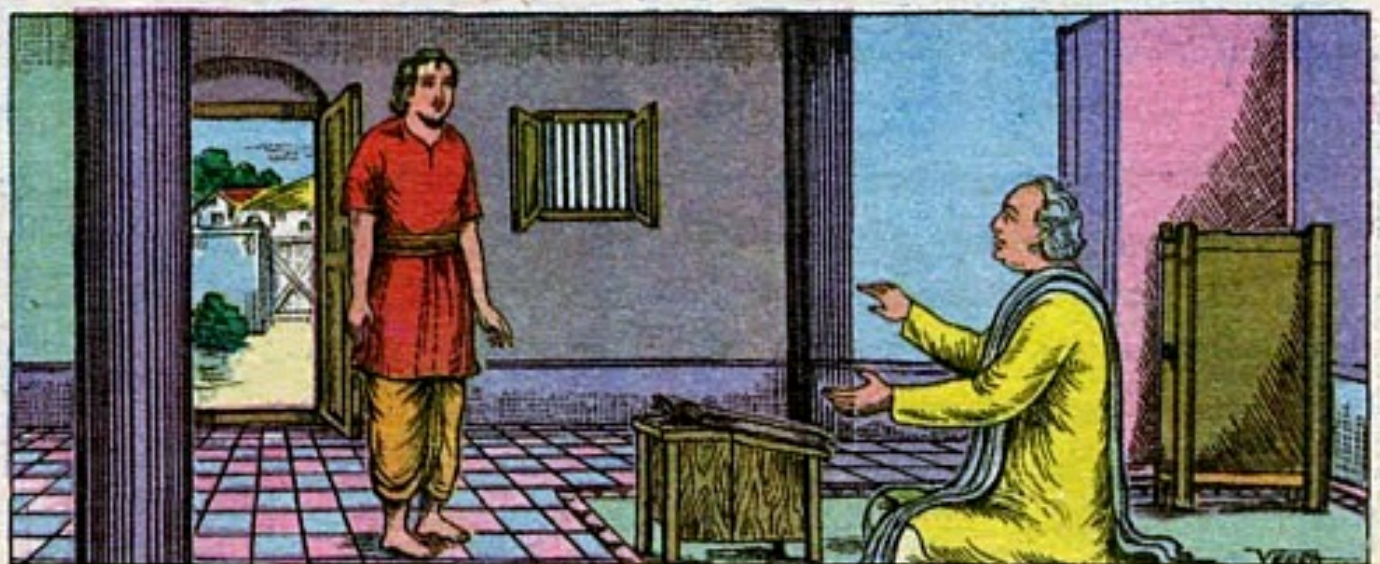
वह कौन था?

नर्मदा नदी के जन्मस्थान पर एक मुनि रहता था। उस के अनेक वर्षों तक संतान नहीं हुई, जिस से उस मुनि ने संतान के लिए भगवान शिवजी की तपस्या की। इस पर दर्शन देकर शिवजी ने उस मुनि से पूछा, "वत्स, सामान्य बुद्धि के साथ दीर्घायु प्राप्त पुत्र चाहिए या सिर्फ बारह वर्ष ही जीने वाला महान बुद्धि प्राप्त पुत्र चाहिए, यह तुम मांग लो सोचकर।" इस पर शिवजी से मुनि ने कहा, "भगवन, बुद्धिमान पुत्र ही चाहिए, चाहे वह अल्पायु का ही क्यों न हो।" उसी प्रकार वरदान देकर शिवजी अंतर्धान हुए।

मुनि का पुत्रोदय हुआ। मुनिपुत्र अपूर्व बुद्धि के साथ बढ़ने लगा, काफ़ी प्रसिद्धि पाने लगा। लेकिन मुनि उदास रहने लगा, जिस पर उस के बेटे ने असलियत जानने की कोशिश की। मुनि ने पुत्र से शिवजी के वरदान के बारे में बता दिया। इस पर मुनिपुत्र एकांत प्रदेश में बैठा, शिवजी की तपस्या करने लगा। उस की आयु समाप्त हुई जिस से उस की ख़ातिर यमदूत चले आये। फिर भी मुनिपुत्र को वे देख नहीं सके, चूँकि उस वक़्त वह शिवजी के ध्यान में सब कुछ भूला बैठा था जिस पर शिवजी की कृपा हो चुकी थी। उस के बाद वह मुनिपुत्र दीर्घायु प्राप्त करके बहुत वक़्त जिया था।

वह मुनिपुत्र कौन था?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)

क्या आप जानते हैं?

१. अगर अंटार्किटा का बर्फ़ गल जाए तो क्या होगा उस का नतीजा?
२. हमारे सौरमण्डल के सभी ग्रहों को अपने में समा सके, ऐसा बहुत बड़ा ग्रह कौनसा है?
३. चीन के किसान लगभग अस्सी प्रतिशत सही रहनेवाली वातावरण -सूचनाएँ किस ढंग से प्राप्त किया करते हैं?
४. लोलक से घड़ियाल चलाया जा सकता है, इस बात की खोज़ किसने की?
५. आज भी आग का उपयोग न जाने, ऐसा क़बीला भारत में है कहाँ?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)

भारत: अतीत–आज

कुरुक्षेत्र

कुरु क्षेत्र का है बहुत पुराना इतिहास । अत्यंत प्राचीन ऋग्वेद में भी इस का ज़िक्र है । सम्राट कुरु ने बहुत समय पहिले यहाँ किया था यज्ञ एक बहुत बड़ा जिस से इस प्रांत का नाम पड़ा था कुरुक्षेत्र । पांडवों व कौरवों के बीच जो अविस्मरणीय और जगत प्रसिद्ध महाभारत का
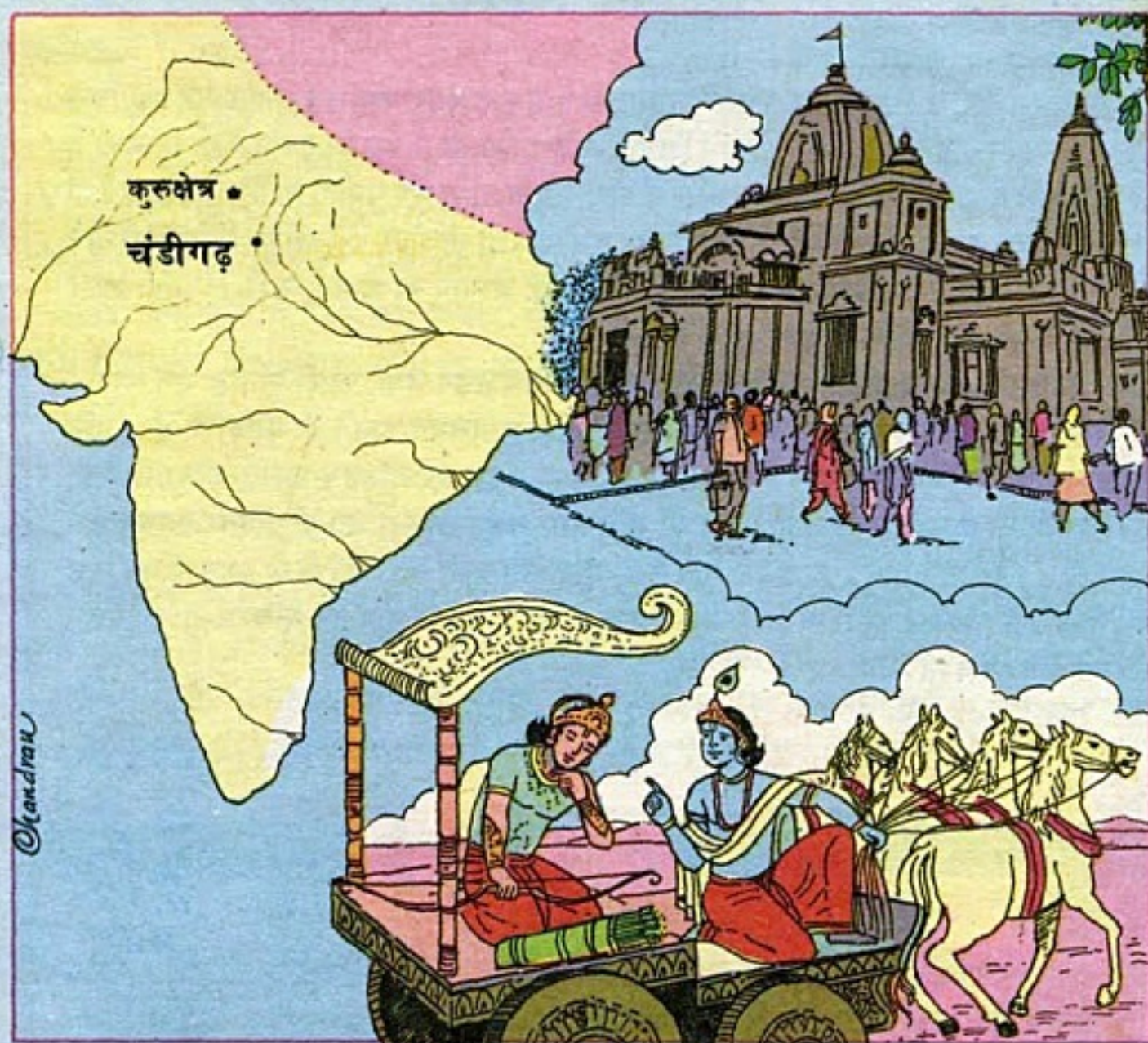
युद्ध हुआ था, वह यहीं हुआ था जिस से कुरुक्षेत्र काफ़ी प्रसिद्ध हुआ था ।

महाभारत के युद्ध के प्रारंभ में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यहीं दिया था गीतोपदेश । महाभारत के युद्ध के वक़्त अपने ही लोगों को जान से मारने की जब आ गयी नौबत, तब हो चुका था अर्जुन बहुत बड़ा दुखी । उस वक़्त भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्तव्योन्मुख बनाते हुए उपदेश दिया था । वही कहलाया गीतोपदेश । श्रीकृष्ण और

अर्जुन के बीच वार्त्तालाप हुआ था जहाँ, उस जगह को ज्योतिसर नाम से पुकारते हैं। भगवदगीता के प्रादुर्भाव के लिए पवित्र वेदी बनकर धर्मक्षेत्र में बदल चुका था कुरुक्षेत्र, जिस को भारत के साहित्य में मिल चुकी थीं काफ़ी प्रसिद्धि।

अनेक युगों से कुरुक्षेत्र बना था अनेक पुण्य पुरुषों का जन्म स्थान। कहा जाता है कि भगवान व्यास ने यहीं रहकर कुछ पुराणों की रचना की थी। प्रसिद्ध व्याकरणवेत्ता पाणिनी भी यहीं रहता था।

आज जिस सरस्वती नदी को अंतर्वाहिनी कहा जाता है, वह एक वक़्त यहीं बहती थी जिस वजह से यह प्रांत धन-दौलत से काफी वैभवपूर्ण रहता था। इस वजह से कई बार विदेशियों के हमलों का भी सामना करना पड़ा था इसे।

आज का कुरुक्षेत्र चंडीगढ़ से ८८ कि. मी. की दूरी पर है। कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसर नामक सरोवर के चारों ओर ३६५ सुंदर मंदिर हैं। सूर्यग्रहण के वक़्त लाखों भक्त इस पवित्र सरोवर में स्नान करते हैं।

हर्याना राज्य का कुरुक्षेत्र आज अनेक कार्यविधियों का केन्द्र बना हुआ था। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के साथ अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक और विद्या संस्थाएँ भी काम कर रही हैं यहाँ, सदैव लोकसेवा की भवना से आगे बढ़ते हुए। कुरुक्षेत्र भर रहा है लोगों के दिलों में एक गजब किस्म का ज़ोश-खरोश।

धरती का व्याकोच

क्या यह बात सच है कि साठ करोड़ वर्ष की धरती का प्रमाण आज की धरती में सिर्फ़ आधा है? दोनों ध्रुवों के बीच की दूरी धीरे-धीरे बढ़ती चली? भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक (भूगर्भ शास्त्र) प्रो. एफ. अहमद का यही विचार है। हाल ही कोच्चिन में हुई विज्ञान-सभा में उन्होंने अपना शोध-निबंध पढ़ा था जिस में अपना मत प्रकट किया था ऐसा। फिर भी इस मत की पुष्टि में शास्त्र संबंधी सबूत दिखाना अभी शेष रहा। यह भी अगर वे पूरा कर दें, तभी हम किसी निष्कर्ष पर आ पाएँगे।

चन्दामामा की ख़बरें

मि॰ होम्स के लिए स्मारक मंदिर

सुप्रसिद्ध लेखक सर आर्थर कॉनन डाइल ने सृजन किया था शर्लाक होम्स पात्र का। लेखक ने अपनी पुस्तकों में मि. होम्स का पता लिखा था २२१ बी, बेकर स्ट्रीट। इसी पते पर सचमुच होम्स-स्मारक मंदिर बनवाया जा रहा है अब। लेखक कॉनन डाइल की जिंदगी तथा उसकी सारी रचनाओं से संबंध रखनेवाली अनेक चीजों को जमा करके यहाँ सुरक्षित रखने का प्रबंध किया जा रहा है।

कुछ सवाल साहित्य के

१. सर आर्थर कॉनन डाइल का पेशा क्या था?

२. चैतन्य महाप्रभु के जीवन की बातें किस पुस्तक में मिलती हैं?

३. 'हेलेन आफ ट्रॉय' थी कौन?

४. जर्मन भाषा का महान काव्य कौनसा है?

५. 'सागा' शब्द का क्या मतलब है?

उत्तर

वह कौन था?

मृकंड मुनि का पुत्र मार्कण्डेय।

आपकी जानकारी है कितनी?

१. सागरों की सतह २४० फुट बढ़ेगी। धरती का कम से कम चौथा भाग पानी में डूब जाएगा।

२. गुरु ग्रह

३. मेंढ़कों की टर्र-टर्र आवाज़ों से।

४. गेलीलियो।

५. अंडमान द्वीपों में।

कुछ सवाल साहित्य के

१. हकीमी।

२. कृष्णदास कविराज द्वारा लिखित 'चैतन्य चरितामृत'।

३. होमर लिखित 'दी इलियड' की नायिका।

४. गेथे लिखित 'फास्ट'

५. आइसलैंड और नार्वो की लंबी गद्य-गाथाएँ।

वशकर की बात

नीलमपुर शहर में धनपति नामक धनकुबेर रहता था। उसके पास धन-दौलत इतनी थी कि अनेक पीढ़ियों तक बैठे-बैठे खाएँ तो भी ख़तम नहीं होती। इतना दौलतमंद था, लेकिन उस के बच्चे नहीं थे। इसी चिंता से धनपति की पत्नी चल बसी। अब धनपति भी उसी दुख से सूखकर कांटा होता जा रहा था।

उन्हीं दिनों वशकर नामक एक महात्मा नीलमपुर में पधारे थे। महात्मा थे त्रिकालज्ञानी। इसलिए अपनी-अपनी समस्याओं के हल पाने के लिए लोगबाग महात्मा के पास जाने लगे। एक दिन धनपति ने वशकर को अपने घर सादर निमंत्रित किया।

फिर महात्मा को अपनी चिंता के बारे में बताकर धनपति ने कहा यूँ, "महात्मा, मैं क्या करूँ जिस से मेरे मन की आशांति दूर हो और सुख-चैन से मैं अपने जीवन के बचे दिन गुज़ार सकूँ?"

धनपति का दर्देदिल समझने में वशकर को देर नहीं लगी। इस लिए वशकर ने समझाया धनपति को कि संतान न रहने से चिंता करना बेतुकी है। फिर मानव-जीवन की ऐसी अनेक बातें बताईं जिन की जानकारी से हर हालत में आदमी चैन से जिंदगी गुज़ार सके।

"महात्मा, धन-दौलत पर लोगों के मन में लालच कितना होता है यह बात तो आप भली भांति जानते हैं। मेरे रिश्तेदार गिद्धों की तरह इंतज़ार कर रहे हैं मेरी मौत का बेसब्री से ताकि उस के बाद मेरी सारी संपत्ति आपस में बाँट लें। लेकिन अपनी जायदाद और जगह-ज़मीन मैं उन्हें देना नहीं चाहता। कृपया आप ही बतायें कि मैं अपनी संपत्ति का कैसे सदुपयोग करूँ।" धनपति ने व्याकुल मन से कहा।

सुषमा पांडेय

इस पर मुस्कुराते हुए महात्मा ने कहा, "तुम बेवजह चिंता कर रहे हो वत्स। मीठा-मीठा होता है जीवन रूपी फल जिसे तुम खुद बना रहे हो कड़वा। आगे से तुम अपना बचा-बाकी जीवन किसी निर्जन प्रदेश में बिता लेना, तभी तुम्हारे मन को शांति मिलेगी। तुम्हारे जीवन के अंतिम दिनों में तुम से मिलेगा एक दिव्यपुरुष, जिस के चेहरे पर अपूर्व प्रकाश होगा। उसी के साथ-संग में तुम्हारी जीवन-लीला समाप्त होगी। वही तुम्हारी जायदाद का वारिस होगा। उसी के हाथों तुम्हारी संपत्ति का होगा सदुपयोग और तुम्हें मिलेगा स्वर्ग-प्राप्ति का लाभ।"

यह सुनकर धनपति ने महात्मा के पांव छूकर अपनी भक्ति प्रकट की। महात्मा वशकर वहाँ से जाते वक़्त बोले, "भूलना मत वत्स। मेरी बात अचूक होती है। उस दिव्यपुरुष के चेहरे पर अपूर्व प्रकाश होगा। उसी प्रकाश से तुम उसे पहचान लेना।"

धनपति ने अपनी ज़मीन-जायदाद नीलमपुर के न्यायधीश के हवाले करके कहा, "मेरी जायदाद का जो असली वारिस होगा, उस के हाथ मैं अपनी जायदाद का वसीयतनामा भेजूँगा। तब तक इस जायदाद की हिफ़ाज़त आप कीजिए।"

वहाँ से धनपति चला गया वहाँ के बहुत नजदीक रहे जंगलों में। एक नदी के किनारे उसने एक कुटी बना ली। चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। तरह-तरह के परिंदे उड़ते-फिरते नज़र आ रहे थे। नदी के बहाव में भी अपूर्व संगीत सुनाई देता था। उस कुटिया के आसपास अनेक फल-वृक्ष भी

थे । वहाँ उस के दिन आराम से गुज़रने लगे ।

धनपति की कुटिया के आसपास कुछ भील रहते थे । वे बड़े ही अबोध और भोले-भाले थे । वे धनपति को फल-कंद और शहद लाकर दिया करते थे । फिर अपनी-अपनी समस्याएँ सुनाकर, धनपति की सलाहें मांगते थे । पहिले धनपति उन की समस्याएँ सुनकर, अपनी सलाहें सुनाया करता था । लेकिन बाद में यह सब उसे अच्छा नहीं लगा । जिस शांति के वास्ते शहर छोड़कर धनपति वहाँ आया था, वह अब इन भीलों की वजह से अपने से दूर भागती सी नज़र आयी ।

एक दिन भीलों के मुखिये जटाल को बुलवाकर धनपति ने यूँ कहा, "मैं एक दिव्यपुरुष का इंतज़ार कर रहा हूँ यहाँ । शांति के साथ अपने जीवन के ये अंतिम दिन मैं गुज़ार रहा हूँ । इस लिए मैं चाहता हूँ कि आगे से तुम लोग मेरे पास मत आओ ।"

धनपति की बातें सुनकर जटाल ने कहा, "स्वामी, हम आप की बात ज़रूर मानेंगे । आगे से वैसा ही होगा जो आप को पसंद है । लेकिन, मेरी एक विनती है । आप अकेले यहाँ रह नहीं सकते । मेरा आख़िरी लड़का विपुल तेज़ है, काफ़ी समझदार है । आप की सेवा के लिए मैं उसे आप के पास भेजूँ, इस की मुझे इजाज़त दीजिए । वह आप के साथ-संग रहते हुए, आप की सेवा करता रहेगा ।"

इस के लिए धनपति ने अपनी स्वीकृति दे दी और जटाल ने विपुल को धनपति के यहाँ छोड़ दिया उसी शाम को । विपुल सचमुच तेज़ था । सुबह से लेकर रात को सोने तक धनपति का हर काम वह कर लेता था । यह

बात धनपति को संतोष देने की ही थी ।

धनपति रोज इंतज़ार करता था दिव्य पुरुष के वास्ते । मगर वह नहीं आया । इस पर दुखी रहता था धनपति । विपुल पूछने लगा उस से कि वह क्यों उदास है । इस पर हँसते हुए धनपति ने कहा, "मैं एक दिव्य पुरुष के लिए इंतज़ार कर रहा हूँ ।"

विपुल की समझ में नहीं आया कि दिव्य पुरुष कैसा होता है । इस लिए यही सवाल किया उसने ।

"दिव्य पुरुष के माने—अपूर्व प्रकाश से चमकते हुए रेशमी वस्त्रों में आसमान से जो अचानक उतर आएगा, उस से होते हैं ।" धनपति ने कहा ।

इन बातों पर विपुल में भी उस दिव्य पुरुष को देखने की इच्छा हुई । वह भी इंतज़ार करने लगा । वक़्त गुज़रने लगा । धनपति का स्वास्थ्य दिन-प्रति-दिन बिगड़ता जाने लगा । मौत के निकट वह चला जा रहा था ।

एक दिन धनपति को लगा कि आगे बहुत दिनों तक वह ज़िंदा नहीं रह पाएगा । उसने विपुल को अपने पास बुलाया ताकि उससे कुछ बोले । लेकिन उसी वक़्त धनपति को विपुल के चेहरे पर प्रकाश दिखाई पड़ा ।

एक पल के लिए धनपति चौंका । उसे अब अपनी भूल महसूस हुई । अब तक उस दिव्य पुरुष के वास्ते इंतज़ार करते हुए, अपने सामने ही चलते-फिरते दिव्य पुरुष को खुद ने पहचाना नहीं । भोलेभाले और अबोध विपुल ही वह दिव्य पुरुष है, जिस के बारे में वशीकर ने कहा था । यह बात जब धनपति ने पहचान ली, आगे उसने देर नहीं की ।

जटाल को बुलवाकर, अपनी सारी कहानी धनपति ने उसे सुनाई । फिर अपना वसीयतनामा विपुल के नाम लिखकर, उसे जटाल के हाथ दिया धनपति ने और समझाया कि किस तरह न्यायाधीश के पास से अपनी जायदाद ले ली जाए । इस तरह जब धनपति की इच्छा की पूर्ति हुई, उस के मन अपूर्व शांति महसूस हुई । उसी शांति के साथ कुछ दिनों में धनपति ने विपुल की सेवाओं में अपनी आँखें मुँद लीं ।

पर मुझे माँ पर बेहद गुस्सा आता है और सोचती हूँ, माँ का एक भी काम मैं नहीं करूँ ।"

इन बातों पर हँस दी नीतू की दादी और बोली, "अच्छा, अच्छा । मैं मानती हूँ, तुम्हें शिकायत है अपनी माँ से, इस लिए तुम अपनी माँ के कामों में नहीं दे रही हो मदद । लेकिन दूसरों की क्यों नहीं करती मदद?"

"अरी दादी माँ! तुम बात बिलकुल नहीं समझती, इस लिए ऐसा कहती हो । याद है, पिताजी मेरे बारे में क्या कहते रहते हैं? 'नीतू है बच्ची और बहुत ही कोमल, उस से काम मत करवाना अभी से, इस लिए मैं पिताजी के कामों में मदद नहीं करती, वरना वे समझ लेंगे कि मैं नहीं हूँ कोमलांगी-सुकुमारी । अब भय्या की बात देखें, वह मुझे प्यार से नहीं देखता । मैं तो हूँ उस से छोटी और हूँ लड़की, हैं न? फिर भी वह मुझे लाड़-प्यार नहीं देता, डांट-डपट सुनाता रहता हैं । इसलिए मैं उस के काम नहीं करती । अब रही छोटी बहन की बात, वह तो मुझ से बहुत छोटी है न? फिर भी उसे ध्यान नहीं रहता कि मैं हूँ उस से बड़ी और करनी चाहिए मेरी इज्जत । वह मेरी एक भी बात नहीं मानती और ऊपर से कहती है कि मैं उसे लाड़-प्यार करूँ, चूंकि वह है मुझ से छोटी । जब वह मेरी बात की सुनी-अनसुनी करे, मैं क्यों मानूं उस की बात?"

"अच्छा, तुम किसी के काम करना नहीं चाहती, यही है न आख़िर वह बात जो तुम कहना चाहती हो मुझ से?" दादी ने पूछा नीतू से ।

"नहीं, नहीं । ऐसा कुछ नहीं । मैं हरेक का काम करना चाहती हूँ । मगर, हरेक से है कुछ-कुछ परेशानी । मैं तुम्हारे कपड़ों की इस्तरी करना चाहती हूँ, मगर तुम इजाज़त देती हो कहा? शौच-निष्ठा के प्रति आख़िर तुम ज़्यादा ही ख़ातिर-ख़याल करती हो, जिस से मैं तुम्हारी सेवा कर ही नहीं पाती । मैं क्या करूँ दादी माँ?" नीतू ने आँखें मटकाते हुए कहा ।

"अरी नीतू, तुम हो अपने दादा जी की तरह बहुत ही बुद्धिमान!" कहकर दादी अपनी पोती को गोद में लेकर चूम लेती थी ।

तभी नीतू की माँ आयी वहाँ और बोली,

"नीतू, हमारा धोबी भोलू गाँव में नहीं है । आज मुझे ज़मींदार के घर मंगनी के मंगल-कार्य में जाना है । मेरी रेशमी साड़ी में सिलवटें पड़ गईं, ज़रा इस्तरी कर दो न!"

"मैं नहीं करती ।" नीतू ने लापरवाही से कह दिया ।

इस पर नीतू की माँ गुस्से में आयी, नीतू को डांटने लगी । इस पर नीतू की दादी बीच में आयी और बहू से कहने लगी, "अरी बहू, बच्चे काम नहीं क़रते तो उन्हें-प्यार से पुचकारकर उन से काम करवाना चाहिए । इस तरह डांटने से बच्चे और भी बिगड़ जाते हैं ।"

"अच्छा, मां जी!आप इस नटखट की बन चुकी हैं हिमायती । इतना कह रही हैं न, क्या आप करवा सकती हैं अपनी पोती से मेरी साड़ी की इस्तरी ?" गुस्से से पूछा नीतू की माँ ने ।

"हाँ, करवा दूंगी । मेरी बात ज़रूर मानेगी मेरी पोती ।" दादी ने कहा ।

कुछ कहे बिना चली गई नीतू की माँ ।

दादी ने पोती से कहा, "सुनो नीतू, यदि तुम माँ की रेशमी साड़ी की कर लोगी इस्तरी तो वह तुम्हें रेशमी घांघरा सिलवा देगी ।"

इस बात पर नीतू को आश्चर्य हुआ । फिर उस ने कहा, "माँ नहीं मानेगी इस के लिए ।" इस शक पर हंसकर उस की दादी ने उसे अपने पास बुलाया और एक उपाय बता दिया । फिर दादी और पोती सोचने लगे कि उस उपाय को कैसे अमल में लाया जाए ।

इसी वक्त दूसरे कमरे में बैठी नीतू की माँ के पास चली आयी पड़ोस में रहनेवाली रानी की माँ और कहा, "चलो, किसी रेशमी

कपड़ों की दूकान में चलेंगी । एक रेशमी साड़ी खरीदनी है । मंगनी में आने के लिए अच्छी रेशमी साड़ी नहीं है ।''

नीतू की माँ ने आश्चर्य से पूछा, ''क्या कहती हो तुम? पिछले महीने तुम ने एक रेशमी साड़ी अच्छी-खासी खरीदी थी न?''

इस पर उदास होकर रानी के माँ ने कहा, ''क्या कहूँ बहन!आज के दिनों में बच्चे हो जा रहे हैं बड़े होशियार । मेरी बेटी बहुत दिनों से रेशमी लहंगा मांग रही थी, मैं टालती आयी । वही किया करती है मेरे कपड़ों की इस्तरी । पिछले महीने जो रेशमी साड़ी मैंने खरीदी थी, उस की इस्तरी करते हुए एक जगह मेरी बेटी रानी ने जला दिया था जान बूझकर ।''

इस पर आश्चर्य के साथ पूछा नीतू की माँ ने, ''क्या कहती हो तुम? जान बूझकर? ऐसा करने से क्या फायदा होता है उसे?''

''पहले मैं भी समझ नहीं सकी । लेकिन जब उसी साड़ी से मैंने उस के लिए दो घांघरे सिलवा दिए, तब वह कहने लगी अपनी दोस्त से कि यह सब उसने इसी के वास्ते कर दिया था । यह बात मैं ने सुन ली ।'' रानी की माँ ने कहा । इस पर नीतू की माँ भौंचक रह गई और कहा उस से, ''अच्छा, दुपहर को आओ । दोनों मिलकर चले जाएँगे किसी रेशमी साड़ियों की दूकान में ।''

रानी की माँ चली गई । तभी नीतू आयी वहाँ और माँ से कहने लगी, ''माँ, लाओ रेशमी साड़ी । मैं कर दूँगी इस्तरी ।''

इस पर नीतू की माँ ने गुस्से के साथ देखा अपनी बेटी की तरफ और कहा, ''अच्छा, मैं इतनी भोली नहीं कि तुम्हारे मन की बात न समझ न सकूँ । इस्तरी करते वक़्त तुम यदि मेरी रेशमी साड़ी जला दोगी तो भी मैं तुम्हें कतई रेशमी घांघरा उस जली साड़ी से सिलवाने वाली नहीं हूँ मैं ।''

ये बातें सुनकर नीतू चौंक गई । उस की या उस के दादी की समझ में नहीं आया कि आख़िर यह राज़ नीतू की माँ कैसे समझ सकी चूँकि वे दोनों नहीं जानती कि रानी की माँ और नीतू की माँ के बीच किस बात पर हुई थी बातचीत ।

विद्यापति ने कुछ घंटों का सफर करके जंगल पार किया, फिर एक मैदान में पहुँचा जो पेड़-पौधों और हरियाली से हरा-भरा था। खुद जिस काम पर निकला था, उस में कामयाबी प्राप्त कर ली थी—इस बात पर वह बहुत खुश था। एक पोखर के पास वह घोड़े से उतरा, एक चट्टान पर बैठ गया। ललिता की दी हुई गठरी खोली, खाना खा लिया। एक बार उस ने पीछे मुड़कर देखा। ललिता और विश्वावसु से मन ही मन माफी मांगी, फिर घोड़े पर चढ़कर विद्यापति फौरन राजधानी की तरफ निकला।

शाम तक वह राजधानी में पहुँच गया, फिर राजमहल में चल दिया। एक राजकर्मचारी ने दूर से ही विद्यापति को देखा, उस के आने की बात राजा को पहुँचा दी। इस पर राजा खुश हुआ, विद्यापति को देखते ही पूछा उसने, "तुम्हारे लौट आने का मैं कई दिनों से इंतज़ार कर रहा हूँ, अपने काम में सफलता पाई कि नहीं?"

"मैं समझता हूँ, जिस दिव्य प्रतिमा की खोज़ में गया था, वही ले आया हूँ। फिर भी......." कुछ और कहने की कोशिश की विद्यापति ने, मगर राजा ने उसे यह मौका नहीं दिया।

"संदेह और शंका को मन से हटा देना पुत्र। ज़िंदगी में बड़े-बड़े काम साधने में अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। इस महान और पवित्र काम को साधने में तुम्हें कौन सी समस्या का मुकाबला करना पड़ा, यह बताओ।" राजा ने कहा।

"मेरी समस्या तो अपनी स्वयं की है। मुझे

ने भी काफ़ी धन खर्च किया, बहुत मेहनत की । हम जो काम कर रहे हैं, यह महान है और पवित्र भी । इस पवित्र कार्य के पीछे यदि कोई कुछ खोए तो भी वह स्वाभाविक ही समझो । जन कल्याण के वास्ते अकसर आदमी को छोटे-छोटे त्याग करना ज़रूरी हो जाता है । इस लिए तुम्हें इस बात पर दुख करना नहीं चाहिए । मैंने सपने में देखा कि सागर में एक कुंदा बहकर आएगा कल सुबह । उस कुंदे को छिलवाकर, नक्काशी करवाकर भगवान की मूर्ति बनवा लेंगे । तुम जिस मूर्ति को ले आए हो, उस में भगवान विष्णु, का अंश है । है न? इस प्रतिमा को हम कुंदे से बनी भगवान की मूर्ति में सुरक्षित करवा लेंगे । इस दिव्य मूर्ति का दर्शन-भाग्य पाकर वह महात्मा भी खुश होगा, जिस ने तुम्हें आतिथ्य दिया था ।''

दुख है कि मैं जिस दिव्य मूर्ति की खोज में गया था, उसे चुराकर ले आया हूँ । जिस आदमी ने मुझे बेहद प्यार दिया, काफ़ी इज्जत दी और अपनी अकेली बेटी के साथ मेरा ब्याह रचाया था, ऐसे पुण्यात्मा के प्रति मैं ने अन्याय किया था । बाप-बेटी दोनों को धोखा दिया, इस चालाकी से मैं ने देव-प्रतिमा की चोरी की कि इसका उन्हें ज़रा भी पता नहीं चले ।'' विद्यापति ने कहा ।

तब राजा ने विद्यापति को तसल्ली देने की कोशिश की, ''इस तरह सोचना अभी से बंद कर दो पुत्र । हमारे मंदिर के निर्माण के लिए दूर-सूदूर प्रांतों से अनेक मूर्तिकार आए, रात-दिन अथक परिश्रम करके उन मूर्तिकारों ने श्रमदान किया । इस के पीछे हम

दूसरे दिन सूर्योदय के एक घंटे पूर्व ही राजा अपने साथ विद्यापति को लेकर सपरिवार सागर के किनारे पहुँचा । जब सूर्योदय होने लगा तो राजा बेहद आनंद और उत्साह से चीख पड़ा, ''वह रहा कुंदा! लहरों पर तैरता हुआ आ रहा है, देख लेना!''

सब ने मुक्त कंठ से कहा, ''हाँ, महाराज! दिखाई दे रहा है साफ-साफ बड़ा सा लंबा-चौड़ा कुंदा ।''

दूसरे ही पल दस नावें सागर में निकलीं । उन नावों में जो लोग थे, वे उस कुंदे को किनारे की तरफ धकेलने की कोशिश करने लगे, मगर वह जरा भी नहीं हिला । नावों से

धकेलने की कोशिश की, मगर रत्ती-राई भर भी वह आगे नहीं चला । इस पर मोटी रस्सियों से कुंदे को नावों से लगाकर बांध दिया गया । आख़िर नावों ने कुंदे को किनारे पर ले आने की इस तरह बहुत बड़ी कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ ।

इस हालत पर राजा का मन उदास हुआ । विद्यापति या वहाँ उपस्थित राजकर्मचारियों के मन में ऐसा कोई विचार नहीं आया जिससे इस समस्या का हल कर सके । सागर के पानी पर काग सा जिसे बहने आना चाहिए था, वह कुंदा इस तरह भारी कैसे हुआ? राजा ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि इस कुंदे को किनारे पर जब तक नहीं पहुँचाया जाएगा, तब तक स्वयं भी नहीं जाएगा वापस ।

शाम हुई । रात हुई । सोने की पालकी में महारानी गुंडिचादेवी सागर के तट पर आयी और महाराजा से उसने पूछा, "प्रभु, सुबह होने तक क्या आप यहीं रह जाना चाहते हैं?"

"देवी, मेरी समझ में नहीं आता कि मुझे क्या करना चाहिए ।" इतना कहकर महाराज ने पल भर के लिए आँखें बंद कर लीं । कुछ सोचा । तुरंत सागर की तरफ देखते हुए उस ने कहा, "रोक दो काम!" फिर अपने पास विद्यापति को बुलाकर कहा, "अब मैं समझ गया कि कुंदा क्यों नहीं हिल रहा है । तुम जिस दिव्य मूर्ति को अपने साथ ले आए हो—उस की अब तक जंगल में जो महानुभाव पूजा करता आया था, उसे मैं तुरंत देखना चाहता हूँ । मुझे उस के पास ले चलो ।"

विद्यापति आगे-आगे बढ़ने लगा । पीछे-पीछे राजा सपरिवार जा रहा था । जंगल के रास्ते पर वे जाने लगे थे भील नायक विश्वावसु से मिलने के लिए । इस तरह अगले दिन दुपहर तक सफ़र करके, आख़िर भीलों की देहात से लगे रहे पहाड़ों के पास वें पहुँच गये ।

भीलों की बस्ती तो हमेशा शांति के साथ रहती थी । दो दिनों से वहाँ की खामोशी और बढ़ चुकी थी । रोज की तरह तड़के ही उठकर निकला था विश्वावासु और थोड़ी ही देर में लौट आया था । "बेटी, यह क्या कर दिया तुम्हारे पति ने!" यह कहते हुए विश्वावसु घर के आंगन में लुढ़क गया । यह

देखकर ललिता चौंक उठी । रोने लगी, दौड़कर पहुँची अपने पिता के पास । फिर उसे घर में पहुँचाकर, चेहरे पर पानी छिड़काया । इस पर विश्वावसु होश में आया । एक बार उस ने आँखें खोलकर चारों ओर देखा, फिर आंखें बंद कर लीं । अपार पीड़ा और दुख उस के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था ।

ललिता को पता चला कि आखिर बात क्या है । कई पीढ़ियों से जिस भगवान की मूर्ति की पूजा कर रहे थे अपने वंश के लोग, उस मूर्ति की चोरी पर ही अपना पिता यूँ दुखी हुआ था—यह जानकर ललिता का मन भी उदास हुआ । उस की समझ में नहीं आया कि आख़िर अपने पति विद्यापति ने यह चोरी क्यों की थी । उसे संदेह हुआ कि जंगल में अपना पति अपने लोगों के साथ रहा था तो इस के पीछे ज़रूर कोई राज़ छिपा हुआ होगा ।

दूसरे दिन सुबह विश्वावसु उठा, रोज की तरह गुफा की तरफ़ निकला । उस के पीछे ललिता और रिश्तेदार भी चलने लगे । विश्वावसु गुफा के भीतर पहुँचा । जहाँ पहले भगवान की मूर्ति थी, उस चट्टान के पास पहुँचकर टकटकी बांधे खड़ा रहा । फिर उस ऊँची चट्टान पर गिरकर, विश्वावसु बिलख-बिलखकर रोने लगा ।

दोपहर के वक़्त एक भील युवक दौड़ते हुए गुफा के पास आया और ख़बर कर दिया, "पहाड़ पर से कुछ लोग हमारी देहात की तरफ़ आ रहे हैं । उन में महाराजा भी हैं ।"

यह सुनकर सब चौंक उठे ।

थोड़ी देर में एक और भील युवक दौड़ा-दौड़ा चला आया और बोला, "जो लोग हमारी देहात की ओर आ रहे हैं, उन में विद्यापति भी है ।"

"उफ! हमारे पास रही दिव्य प्रतिमा चुरा ले गया, फिर भी तृप्ति नहीं मिली शायद । हमारा सब कुछ लूट लेने आ रहे होंगे!" एक अधेड़ उम्र वाले ने कहा ।

"नहीं, नहीं । ऐसा नहीं होगा । राजा खुद चले आए हैं तो ज़रूर कुछ बात होगी ख़ास । हमारे नायक से बात करने के लिए ही महाराजा आए होंगे ।" एक बूढ़े ने कहा ।

विश्वावसु गुफा से बाहर चला आया । दूर से राजा आ रहे थे । दोनों हाथ जोड़कर

विश्वावसु शिला जैसा खड़ा रहा था । राजा सीधे आया विश्वावसु के पास, फिर उसे बाहों में ले आलिंगन करते हुए राजा ने कहा, "महाशय, चोर तुम्हारा दामाद नहीं, मैं हूँ । मुझे माफ करो!"

यह सुनकर सब चौंक उठे, राजा को ही देखने लगे ।

आँसू पोंछ लेते हुए विश्वावसु ने पास की चट्टान दिखाई राजा को और इशारा किया कि बैठ जाएँ । राजा ने उस चट्टान पर बैठकर यूँ कहा, "विश्वावसु, मेरी बात कृपया अंत तक सुन लो ।" फिर राजा ने उस से कह दिया कि भगवान की प्रेरणा से खुद ने जगन्नाथपुरी के सागर तट पर एक मंदिर बनवाया था, मंदिर में प्रतिष्ठापन के वास्ते भगवान की मूर्ति के लिए कुछ पंडितों को भेजा था और लाचार होकर विद्यापति ने मूर्ति की चोरी की थी । फिर राजा ने विश्वावसु से यूँ प्रार्थना की, "विश्वावसु, अनेक पीढ़ियों से तुम्हारे वंश के लोग उस भगवान की मूर्ति की पूजा करते रहे । आगे अनेक भक्तों की पूजाएँ उस दिव्य मूर्ति को मिलें, यह है भगवान का संकल्प । एक दैवदत्त कुंदे से बनी मूर्ति के भीतर हम इस दिव्य मूर्ति को सुरक्षित रखना चाहते हैं । इस के लिए तुम्हारी स्वीकृति हम लेना चाहते हैं । अपने वंश की दिव्य प्रतिमा को पुरी के मंदिर में प्रतिष्ठापन करने तुम हमें अनुमति सानंद दो विश्वावसु ।"

विश्वावसु ने चुपचाप सिर हिला दिया । तब राजा ने फिर सागर में एक इंच भी न हटने वाले कुंदे के बारें में बताकर कहा यूँ, "तुम हमारे साथ अभी निकलो । उस कुंदे को छूकर, इस प्रयत्न में हमें अपना पूरा सहयोग दोगे, ऐसा हमारा विश्वास है ।"

विश्वावसु थोड़े पल मौन रहा, फिर कहा, "आप की आज्ञा के अनुसार आप के साथ आने को मैं तैयार हूँ प्रभु!"

यह सुनकर राजा का दिल हल्का हुआ, यूँ लगा कि बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो । इस खुशी में एक और बार राजा ने विश्वावसु को प्यार से बाहों में भर लिया । फिर ललिता की तरफ देखकर राजा ने कहा, "बेटी, तुम अपने पति के इस काम का बुरा मत मानो । महान कार्य की पूर्ति के लिए उसने यह बात तुम से छुपाकर रखी । इस बात पर तुम्हारे पति ने

काफी मानसिक संघर्ष का सामना किया था, यह मैं समझता हूँ अच्छी तरह ।"

तभी ललिता और विद्यापति की आँखें मिल गईं । विद्यापति ने कहा, "भगवान का कार्य करते वक़्त, मैंने यह बात तुम से छुपाकर रखी । मुझे माफ़ कर दो । मैं ज़ल्दी लौट आऊँगा । तुम्हें राजधानी ले जाऊँगा ।"

ये बातें सुनते ही ललिता की आँखों में आँसू घूम आए । लेकिन किसी तरह अपने दुख को दबा लेने में वह कामयाब हुई ।

दूसरे दिन शाम तक राजा सपरिवार अपने साथ विश्वावसु को लेकर सागर तट पर पहुँचा । विश्वावसु नाव में बैठकर सागर में थोड़ी दूर आगे बढ़ा और कुंदे को उस ने भक्ति के साथ छू लिया । तुरंत वह कुंदा अपने आप तैरता हुआ किनारे पर आ लगा । यह देखकर वहाँ उपस्थित सब लोगों के चेहरे ख़ुशी से खिल उठे । राजा के संतोष का आरपार नहीं था । राजा के कर्मचारियों ने उस कुंदे को राजमहल में पहुँचा दिया ।

अगले दिन तडके ही मूर्तिकारों और दरबारी शिल्पाचार्यों को बुलवाकर पूछा राजा ने, "इस कुंदे से कौनसी दैवमूर्ति बनाना शुभदायक होगा?"

तब मूर्तिकारों ने अदब के साथ राजा से कहा, "प्रभु! शिलाओं को देवी-देवताओं की प्रतिमाओं में बदलना हम जानते हैं । मगर इस तरह लक्कड़ से भगवान की प्रतिमा बनाने के हम बिलकुल आदी नहीं हैं । इस काम में हमारा जरा भी अनुभव नहीं है ।"

ठीक उसी वक़्त वहाँ एक बूढ़ा आया । उसने राजा से कहा, "राजन्, आप द्वारा बनाए गये इस मंदिर में भाई-बहन बलभद्र तथा सुभद्रा के साथ मिलकर श्रीकृष्ण के रूप में भगवन विराजमान हों—यही दैवी संकल्प है । इस मंदिर की विशेषता भी यही है । आप मुझे इज़ाज़त दीजिए, मैं आगे बढ़ूंगा इस पवित्र कार्य में और बना दूँगा वे मूर्तियाँ । मगर आप से मेरी एक प्रार्थना है । दरवाजे बंदकरकें तनहाई में बैठकर मैं यह काम करूँगा । जब यह काम पूरा होगा, तभी मैं दरवाजे खोलकर आऊँगा । इस बीच किसी को मेरे पास न आना चाहिए । संपूर्ण एकांत चाहिए ।"

"ऐसी हालत में आप के खाने-पीने की
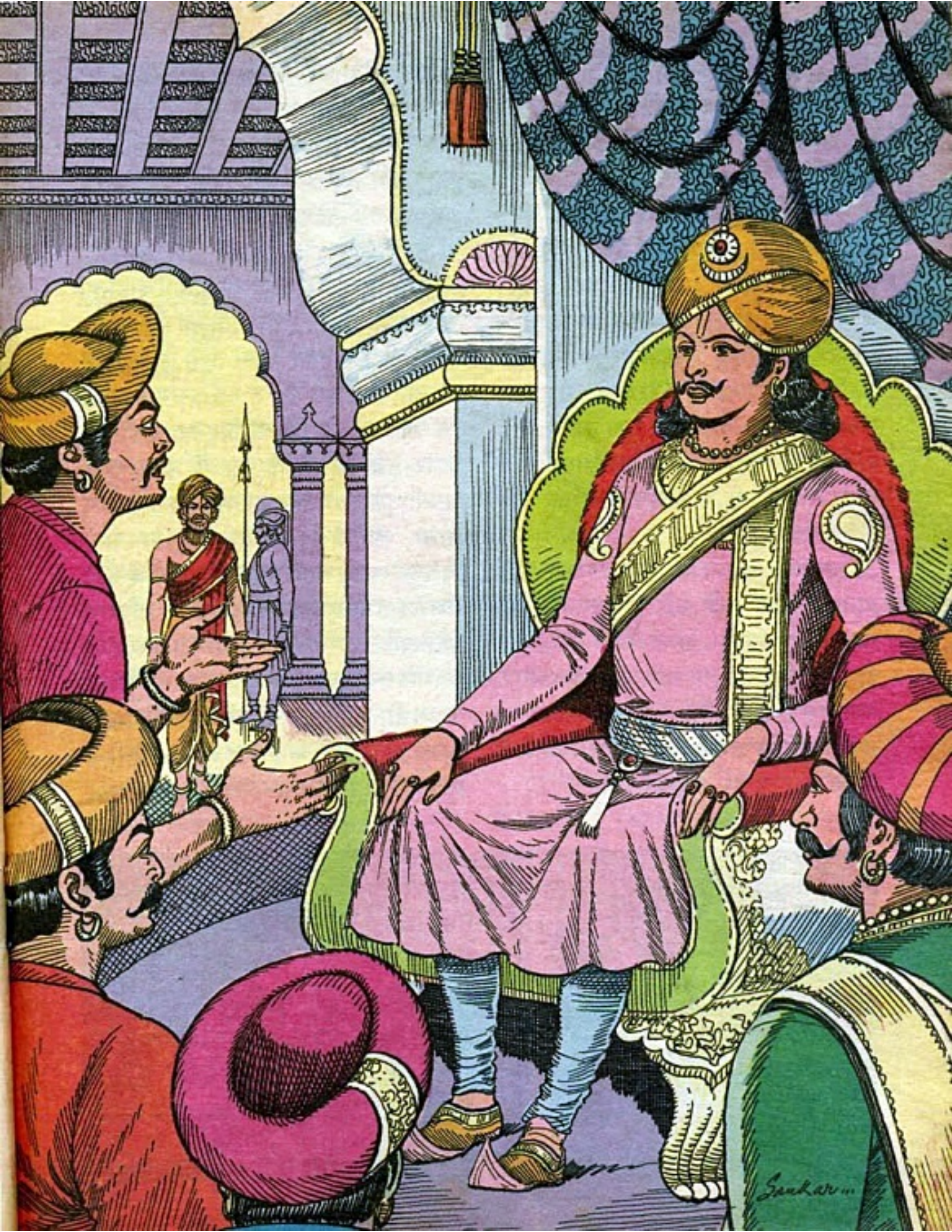
व्यवस्था कैसे होगी?" राजा ने ।

"आप उस की चिंता छोड़िए राजन् । जब तक काम खतम नहीं होता, मैं न कुछ खाता, न पीता ।" उस बूढ़े ने कहा ।

उस वृद्ध की बात राजा ने मान ली । राजमंदिर में एक विशाल कमरा था जिस में जाकर उस बूढ़े ने दरवाजे बंद कर दिए । अंदर काम चल रहा था, इस के सबूत में भीतर से आवाज़ें आती थीं । बाहर से महारानी गुंडिचादेवी दरवाजे से कान लगाकर अकसर ये आवाजें सुना करती थी । छेनी और हथौड़ा के चलने की आवाजें उसे स्पष्ट सुनाई देती थीं । इस तरह वह रोज सुना करती थी ।

एक दिन उसे कमरे के भीतर से कोई आवाज़ सुनाई नहीं पड़ी । दूसरे दिन भी आवाज़ नहीं आयी । खाना-पानी न लेता था वह बूढ़ा, बेचारा वह न जाने कैसा होगा — इस विचार से रानी गुंडिचादेवी का मन तिलमिला उठा । इस विचार से रानी ने तुरंत दरवाजे धकेल दिए, भीतर झांककर देखा ।

जल्दबाजी में महारानी गुंडिचादेवी ने भूल से ऐसा कर दिया था, उस बूढ़े मूर्तिकार को दिए गये वचन का इस तरह भंग हो चुका था । जब महारानी को अपनी भूल महसूस हुई, तब तक जो हानि होनी नहीं चाहिए, वह हो चुकी थी ।

लगन के साथ लक्कड़ की मूर्तियाँ बना रहा था बूढ़ा । उस ने तुरंत रानी को देखा, फिर वहाँ से गायब हुआ । इस तरह देवी-देवता की मूर्तियाँ अधूरी ही रह गईं । सब ने सोचा कि देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा ही इस प्रकार वृद्ध शिल्पी के रूप में आया था । अपनी भूल पर रानी बहुत दुखी हुई । राजा ने सोचा, जो होना था सो हो गया था । विद्यापति द्वारा लायी गयी देवता मूर्ति के साथ बलभद्र तथा सुभद्रा की मूतियाँ भी मंदिर में प्रतिष्ठापित करवा दीं । विद्यापति के वंशजों को मंदिर के पुजारी बनाकर राजा ने घोषणा करवा दी । उसी दिन से पुरी का श्रीजगन्नाथ मंदिर हमारे देश के प्रसिद्ध विष्णु मंदिरों में एक बनकर विराजमान रहा । (समाप्त)

अकलमंद

बात पुरानी थी। स्पेइन देश में पेड्रोशॉन नामी नौजवान रहता था। वह सचमुच अकल का पुतला था। मोटे-ताज़े हृष्टपुष्ट बैलों के साथ लड़कर कुछ साहसी खिलाड़ी उस देश में लोगों को मनोरंजन दिया करते थे। ऐसे हट्टेकट्टे बैलों को पहिले कुछ नौजवान भालों से घायल करके उकसाते थे। इस तरह भड़काने पर वे बैल गुस्से से सींग मारने उन नौजवानों की तरफ़ दौड़े-दौड़े आते थे। ऐन वक़्त पर ऐसे अकलमंद नौजवान किसी पेड़ की टहनी पकड़ लेते थे उछलकर। आख़िरी पल में बंदर जैसे पेड़ की किसी शाखा को पकड़कर जान बचा लेता था पेड्रोशॉन भी, जो बैलों को भड़कानेवालों में एक था। ऐसे वक़्तों में ठीक बंदर जैसा लगता था, इस लिए पेड्रो को लोग अकलमंद बंदर' नाम से पुकारते थे।

देश-विदेश घूमकर, वहाँ के अजूबे देखने की इच्छा थी पेड्रो की। मगर मौक़ा नहीं मिलता था। अचानक एक मल्लाह से उस की दोस्ती हो गई थी। फिर उसी मल्लाह की मदद से समुद्र-यात्रा पर निकला और कुछ ही दिनों के बाद पहुँचा था चीन देश में।

उन दिनों चीन पर एक महारानी का शासन था। उसके लंबे-लंबे काले बालों में एक दिन चांदी का तार जैसा एक सफेद बाल दिखाई पड़ा।

महारानी की सहेलियों ने हिकमत दिखाई यूँ कहकर, "मालकिन, भगवान ने रात में आप को चांदी का एक तार प्रदान किया था!"

तुरंत महारानी ने आइने में देख लिया, पके बाल को पहचान लिया जो सचमुच चांदी का तार सा चमकता रहा। फिर थोड़ी देर सोचकर महारानी ने फौरन ज्योतिषियों को बुलवाया।

ज्योतिषी आनन-फानन चले आए,
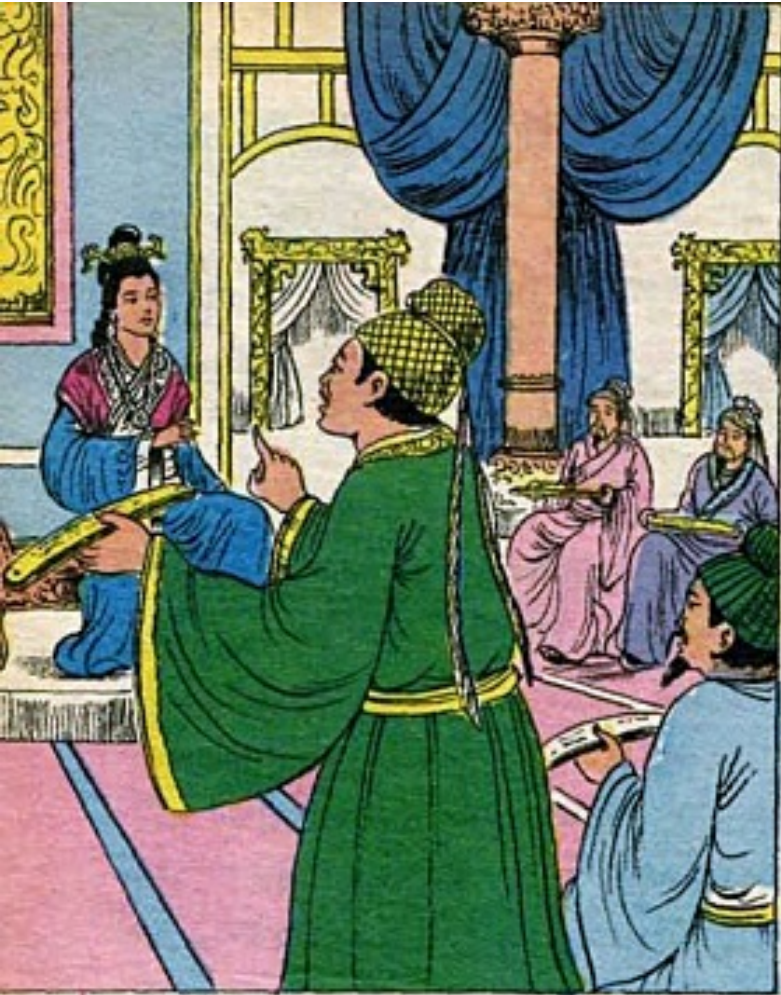
महारानी के बालों में चांदी के तार जैसे बाल के आगमन पर काफ़ी देर तक आपस में बहस करते रहे । तालपत्र-ग्रंथों को उलटा-पुलटा भी । फिर हैरान होकर सभी ज्योतिषी टकटकी बांधकर महारानी को देखने लगे ।

महारानी की समझ में नहीं आया कि आख़िर बात क्या है । इस लिए महारानी ने पूछा, "क्या हुआ? बोलते क्यों नहीं? इस का फल क्या होता है?"

महारानी के सवाल पर एक बूढ़े ज्योतिषी ने कहा, "इस का फल बड़ा ही अशुभ है महारानी । इस से यह सूचना मिलती है कि आप पर कोई आफत आने वाली है ।"

"उफ! ऐसी बात है तो फिर इसे कैसे टाला जाए?" महारानी ने उदास स्वर में पूछा ।

तभी सभी ज्योतिषियों ने मुक्त कंठ से कहा, "हम लाचार हैं महारानी जी । इन ज्योतिष ग्रंथों में यह बात नहीं लिखी थी कि इस आफत को कैसे टाल सकेंगे ।"

उस पल वहाँ के हर किसी के चेहरे पर उदासी छायी थी । किसी के मन में यह बात नहीं आयी कि कैसे महारानी के मन से उदासी को दूर भगा सकें ।

उसी वक़्त एक युवा ज्योतिषी के मन में कोई विचार आया । उस ने अदब के साथ महारानी से कहा, "महारानीजी, एक बात की मुझे सूचना मिल गई । लेकिन, दुख है कि यह बात मुझे आप को बतानी पड़ रही है ।"

"दुख बाद में कर लेना, पहले वह बात बता दो ।" महारानी ने कहा ।

इस पर डरे-सहमे स्वर में उस युवा ज्योतिषी ने कहा, "आप के बालों में जो दुष्ट आत्मा चली आयी, उस की वजह से आप शीघ्र दांत के दर्द से पीड़ित होंगी ।" यह बात कहते हुए ज्योतिषी सचमुच रो पड़ा ।

युवा ज्योतिषी को रोते देखकर महारानी की आंखें भी डबडबाईं । तुरंत अपने गले से एक मोतियों की माला निकालकर महारानी ने उस युवा ज्योतिषी को दे दी ।

ज्योतिषी चले गये वहाँ से । महारानी के सिर पर टूट पड़ने जा रही थी जो आफ़त, उस के बारे में सुनकर राजपरिवार के निकट तथा दूर के सदस्य सभी आँसू बहाने लगे । ज़ोर-ज़ोर से चीखते हुए रोने लगे ।

ठीक इसी वक़्त पेड्रो ने राजधानी में कदम

रखा। महारानी के महल के पास जब वह पहुँचा, तब लोगों के रोने-धोने की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। महारानी पर आने वाली बला के बारे में याद करते-करते उस के नौकर-चाकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला चिल्लाकर रो रहे थे।

कुछ सोचता हुआ चल रहा था पेड़ोशॉन राजमार्ग पर। जब उसे अचानक ये चिल्लाहटें सुनाई पड़ीं तो वह घबड़ा गया और सोचा उस घबड़ाहट में कि पीछे से कोई बैल दौड़ता आ रहा है अपने को सींग मारने। इस लिए उस बैल से अपने आप को बचाने के इरादे से पेड्रो उछला शाही इमारत की एक बड़ी सी खिड़की पर। वहाँ एक सिपाही था पहरे पर। उसने सोचा पेड्रो को कोई चोर-उचक्का और उसे पकड़कर बूढ़े दीवान के सामने हाज़िर कर दिया।

बूढ़ा दीवान कुछ विदेशी भाषाएँ जानता था थोड़ा-थोड़ा। इस लिए पेड्रो से बात करने में उसे तकलीफ़ ज़रा भी महसूस नहीं हुई। टूटी-फूटी सही, वह दीवान पेड्रो की भाषा बोलने लगा।

दीवान ने पूछा पेड्रो से, "किस देश से आये हो? क्या नाम है? और क्या करते हो?"

डर के मारे पेड्रो ने सभी सवालों का एक ही जवाब दे दिया फौरन, "अकलमंद बंदर।"

अकलमंद शब्द से दीवान ने समझ लिया कि वह नौजवान अक़्लमंद है। इस पर उस ने पेड्रो से पूछा, "तुम हो न अकलमंद? हमारी महारानी पर जो आफ़त आनेवाली है, क्या तुम उसे रोक पाओगे?"

"आफ़त? कैसी आफ़त?" पेड्रो ने
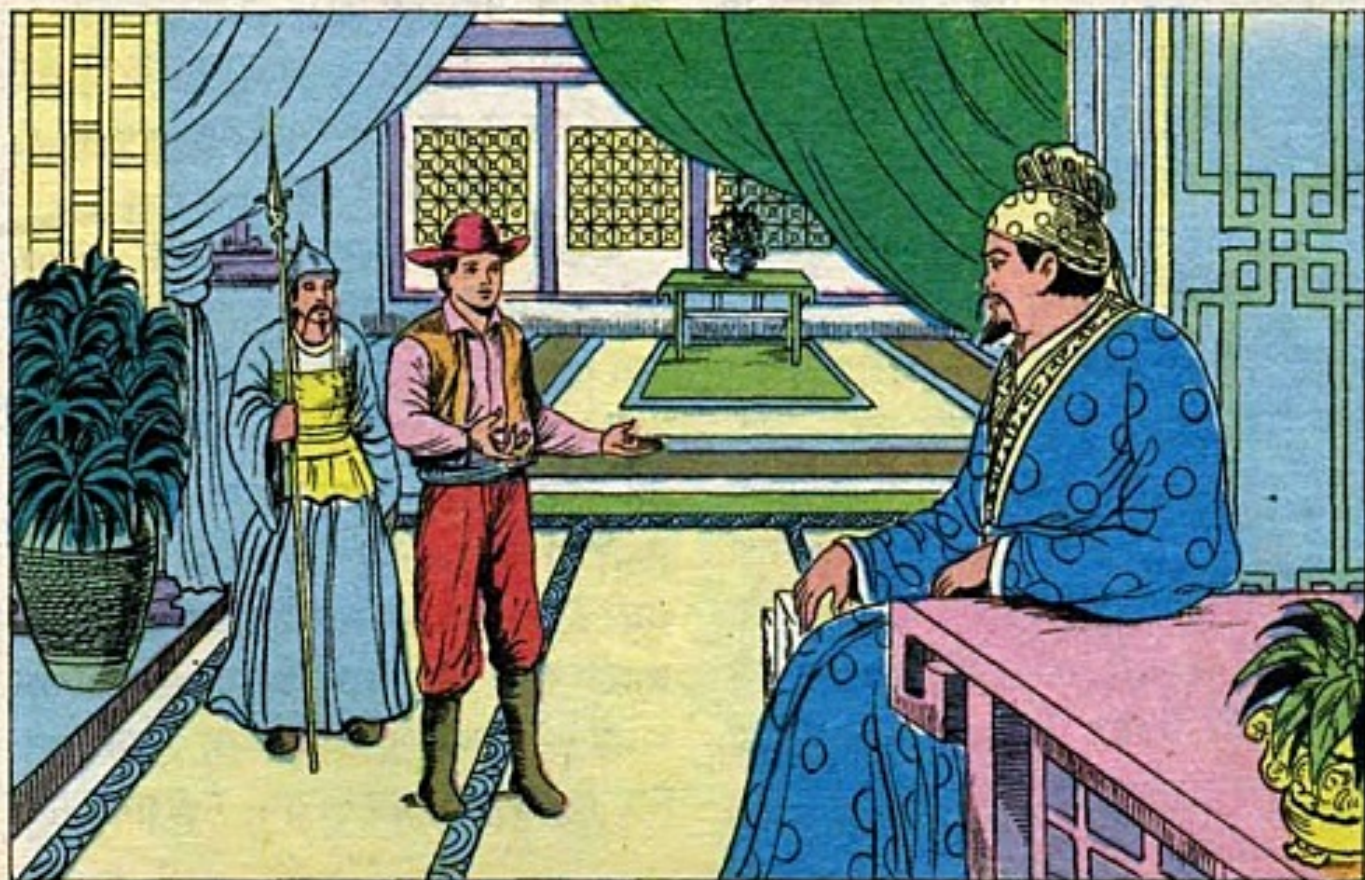
आश्चर्य से पूछा । इस पर दीवान ने उसे सारी बात समझा दी । तब पेड्रो ने ज़ोश के साथ कहा, "यह कौन सी बड़ी बात है? आप यकीन कीजिए, ऐसी आफ़तों को मैं मिनटों में रफ़ा-दफ़ा कर दूँगा ।"

इस उत्तर पर दीवान बहुत ख़ुश हुआ । नौकरों ने ऐसा ही किया ।

तब पेड्रो को अपने साथ लेकर दीवान चल दिया महारानी के पास । फिर कहने लगा, "महारानी जी, यह नौजवान सारी दुनिया में मशहूर अकेला अक़्लमंद है । एक बवंडर ने भूत की तरह पकड़ लिया इस नौजवान को, फिर सात समुंदरों पर से खींच लाकर इसे हमारे शहर में फेंक दिया । इस का यूँ यहाँ चले आना सचमुच हमारा भाग्य है ।"

उस वक्त महारानी के सामने साष्टांग प्रणाम करते पेड्रो ज़मीन पर पड़ा हुआ था । महारानी ने कहा, "विश्व प्रसिद्ध बुद्धिमान! अब तुम उठो न!"

महारानी की बात पेड्रो की समझ में नहीं आयी, चूँकि पेड्रो चीनी समझता नहीं था । इस लिए वैसे पड़े रहकर पेड्रो ने दीवान से पूछा, "महारानी जी क्या कहती हैं?"

"उठना मत, ऐसे ही पड़े रहो । अगर सिर उठाओगे तो तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा—यही कह रही हैं महारानी जी!" दीवान ने पेड्रो को जवाब दिया ।

महारानी ने दीवान से पूछा, "अकलमंद विदेशी क्या कह रहा है दीवानजी?"

"आप पर आनेवाली आफ़त को पल भर में भाग देगा दूर, यही कह रहा है यह बुद्धिमान, महारानी जी!" दीवान ने कहा ।

"दीवान जी, अगर बात ऐसी है तो देर क्यों? इस से कह दीजिए कि वह काम कर दे तुरंत ।" महारानी ने कहा ।

दीवान ने पेड्रो को यह बात बता दी । तुरंत पेड्रो उठा फुर्ती से, अदब के साथ महारानी के पास गया, काले-मुलायम बालों से वह सफेद बाल पकड़ भी लिया । फिर बड़ी मृदुता से वह बाल उखाड़ दिया और कह दिया कि महारानी पर आनेवाली मुसीबत अब टल चुकी है । सफ़ेद बाल उखाड़ते वक़्त पेड्रो ने अपनी भाषा के मंत्र जैसे लगने वाले कुछ शब्दों का उच्चारण भी किया था । इस लिए सब ने सोचा, ज़रूर अब महारानी पर

आनेवाली मुसीबत टल गई है । पेड्रो की बात दीवान ने जब महारानी से कह दी, सब के चेहरों पर आनंद की लहर दौड़ आयी ।

असीम खुशी के साथ महारानी का चेहरा खिल उठा । उस ने दीवान से कहा, "दीवानजी, सचमुच यह नौजवान है श्रेष्ठतम बुद्धिमान । हमें ऐसे महान बुद्धिमान को छोड़ देना नहीं चाहिए । आज ही मैं इस बुद्धिमान युवक को आप की जगह दीवान बना देना चाहती हूँ । आज से आप का कार्यकाल समाप्त हो चुका है । इस लिए, रिवाज के मुताबिक आप की फाँसी का शुभ वैभवपूर्ण कार्यक्रम जो चलना चाहिए, इसका इंतज़ाम अतिशीघ्र करवा दीजिए । आप की आत्मा को शांति मिल जाए, इस वास्ते दस हज़ार पुजारियों को पूजा-पाठ करना होगा । इसका भी तुरंत प्रबंध करवा दीजिए ।"

ये बातें सुनते ही दीवानजी के तन-बदन से पसीना छूटने लगा । पेड्रो की समझ में नहीं आया कि आखिर बात क्या है । इस लिए उसने पूछा दीवान से, "क्या बात है दीवानजी?"

दीवान ने सारी बात कह दी पेड्रो से । यह बात सुनते ही पेड्रो ने सोचा थोड़ी देर, फिर कहा यूँ, "दीवान जी, आप बेकार क्यों ऐसे घबड़ाते हैं? आप महारानीजी से कह दीजिए कि आप को मेरा सहायक बना दें, तभी मैं दीवान बनने को तैयार हूँ ।"

पेड्रो की बात सुनते ही दीवान ने राहत की सांस ली और बात महारानी को बता दी ।

"अच्छा, इस महान बुद्धिमान ने कहा ऐसा तो ज़रूर होगी हमारे रिवाजों में कोई कमी । फांसी के मामले में बेहद प्रसिद्ध हमारे राजपरिवार का यह रिवाज हम आज से बंद कर रही हैं ।" महारानी ने कर दी घोषणा ।

"हम आप के बड़े आभारी हैं महारानीजी!" कहते हुए दीवान ने महारानी के सामने गिरकर झट साष्टांग प्रणाम किया ।

इस तरह पेड्रो शॉन हो गया चीन का दीवान, एक खूबसूरत सी चीनी लड़की से शादी भी कर ली और कई साल अकलमंद दीवान कहलाकर उसने ऐशो आराम के साथ अपना वक़्त गुज़ारा ।

रोजगार का राज़

मोतीराम नामक एक सौदागर था जिस ने घी की तिजारत करके बहुत कमाया था । उसके दो लड़के थे । मरते वक़्त मोतीराम ने दोनों लड़कों को अपने पास बुलाया और कारबार का भला-बुरा सुनाने समझाने लगा, "सुनो बेटे, किसी भी सौदा में जो धोखा-धड़ी और बेईमानी का साथ लेगा, वह कभी भी अपने सौदे में सफल नहीं होगा । तुम किसी के साथ कारबार में बेईमानी न करना । बेवफाई का साथ न देना । फिर सौदे की छोटी मोटी बातें तुम खुद जान लोगे वक़्त के साथ-साथ ।"

कुछ ही दिनों के बाद मोतीराम का देहांत हो गया । उस का बड़ा बेटा बडका और छोटा बेटा छुटका घी का सौदा करने लगे । छुटके का सौदा काफ़ी अच्छा था । रोज़ कनस्तर पर कनस्तर घी की बिक्री होती थी उस की दूकान में । लेकिन बड़के का व्यापार इस के बिलकुल विपरीत था । उस के पास घी खरीदने वाले रोज़-ब-रोज़ घटते जाने लगे ।

एक दिन बड़का चला आया छुटके के पास और उस ने पूछा, "छुटका, हम दोनों एक ही किस्म का घी बेच रहे हैं न? फिर भी लोग तुम्हारी दूकान में ही घी खरीदने के लिए भीड़ों में आ रहे हैं और मेरे पास आने वालों की तादाद दिन ब दिन घटती जा रही है । बोलो, ऐसा क्यों हो रहा है?"

इस पर हलकी हंसी के साथ छुटके ने कहा, "भय्या, इस की ख़ास वजह तो कुछ भी नहीं है । ज़रा उन कनस्तरों की तरफ़ देख लो न!" फिर गुल्लक के पास रहे घी के कनस्तरों की तरफ़ छुटके ने इशारा किया । उन कनस्तरों पर भाव के पर्चे चिपके हुए थे जिन पर लिखा हुआ था 'तीस रुपये' ।

"अरे, यह क्या है छुटके? उनतीस रुपये का घी तुम तीस रुपये में क्यों बेच रहे हो? यह धोखा है न?" बड़के ने चौंककर पूछा ।

"तुम समझते हो धोखा, लेकिन लोग समझते हैं कि मैं एक भरोसामंद हूँ । एक रुपया भाव में बढ़ा देने से लोग समझ रहे हैं कि मेरी दूकान का घी बेहतर है । इतना ही नहीं, ये लोग मेरी ईमानदारी की तारीफ़ भी कर रहे हैं ।" छुटके ने कहा ।

—जी.सी. जीवी

नया अमलदार

उन दिनों कर्नाटक पर चामुण्डेश का शासन था। उन के यहाँ एक पुरोहित था गुंडप्पा नाम का।

एक दिन राजा बोले गुंडप्पा से, "आज तक तुम ने हमारे सभी दैवी कार्य बड़ी समर्थता से करवाते आये हो। मैं तुम पर बहुत ख़ुश हूँ। अपने मन में कोई विशेष इच्छा हो तो बता देना।"

इस पर गुंडप्पा बोला, "महाराज, वैसे तो मैं ख़ुश हूँ, आप की दया से किसी बात की कमी नहीं है। लेकिन, मन में कई दिनों से है एक इच्छा कि थोड़े दिन किसी जिले का अमलदार बनकर लोगों पर हूकूमत चलाऊँ। आप को कोई दिक़्क़त न रहे तो कृपया मेरी इस इच्छा की पूर्ति कीजिए।"

"अच्छा, ऐसा ही होगा।" राजा ने मंदहास से कहा।

उन दिनों देवगिरि जिले के लिए अमलदार की नियुक्ति करनी थी। राजा ने उस जगह गुंडप्पा को नियुक्त कर दिया।

गुंडप्पा काफ़ी पढ़ा-लिखा था, ज्ञानी था। इस लिए राजा ने सोचा कि अपने पद के दायित्व काफ़ी क़ाबिलियत से निभाएगा। फिर भी, राजा को लगा, उसे कुछ ज़रूरी सूचनाएँ देना अच्छा होगा। राजा ने गुंडप्पा को निम्न सूचनाएँ दीं।

अमलदार को हमेशा दूसरों से अपना मुंह काला करना चाहिए। (अर्थात् दूसरों से खुद दूर होना चाहिए; हर किसी से दोस्ती करके, निकट का सा नहीं रहना चाहिए।)

अमलदार को हमेशा दूसरों के कान ऐंठना चाहिए। (अर्थात् कर्मचारियों के छोटे-छोटे दोषों को भी माफ नहीं करना चाहिए, छोटे-छोटे दण्डों से चेतावनी देनी चाहिए।)

अमलदार के हाथों दूसरों की चुटिया होनी चाहिए। (अर्थात् अमलदार को चाहिए कि

२५ वर्ष पुरानी चन्दामामा की कहानी

वह दूसरों को अपने काबू में रख ले । सब की भूलें जानकर याद रख ले ताकि वक़्त आने पर उन्हें झाड़ सके ।)

राजा ने संक्षिप्त में जो सूचनाएँ दीं, उन्हें सावधानी से सुनकर गुंडप्पा ने कहा," समझ गया हूँ महाराज! ऐसा ही करूँगा ।"

फिर अधिकार पत्र लेकर नया अमलदार गुंडप्पा अपार आनंद के साथ घर चला गया । गुंडप्पा के जाते ही राजा ने देवगिरि को खबर भेजी कि उन के लिए नया अमलदार अमुक दिन अपना पद संभालने आ रहा है ।

देवगिरि के राजकर्मचारी ख़ुश हुए । नए अमलदार के स्वागत-सत्कार के लिए सभी इंतज़ाम करने में वे लग गये । दूसरे दिन वे नगर के बाहर नए अमलदार के स्वागत के लिए इंतज़ार करने लगे ।

नया अमलदार बना गुंडप्पा सुबह ही निकल पड़ा था एक गठरी सिर पर रखकर, जिस में उस के धोती-तौलिया आदि कपड़े थे । पैदल जाने से और बड़े आराम से चलते जाने से उसे देवगिरि पहुँचने में काफी देर लगी थी ।

नगर के बाहर सुबह से स्वागत-सत्कार के लिए जो राजकर्मचारी खड़े थे, वे कड़ी धूप में काफी परेशान हो चुके थे । मगर नए अमलदार का कहीं पता नहीं था ।

दोपहर के वक़्त जब उन की नजर गुंडप्पा पर पड़ी तो वे सोचने लगे कि कम से कम नए अमलदार की कोई ख़बर मिल जाएगी, चूँकि वह राजधानी की तरफ़ से ही आया था ।

एक अधिकारी ने गुंडप्पा के पास जाकर पूछा, "पंडितजी, हम नए अमलदार की प्रतीक्षा कर रहे हैं । उन के बारे में आप कुछ जानते हों तो बता दीजिए ।"

इस पर गुंडप्पा ने सिर से गठरी नीचे उतारी, फिर धोती की कमर के पास हाथ ले गया, अंटी से बड़े आराम के साथ उसने हुकूमतनामा निकाला बाहर, फिर उस अधिकारी के हाथ में रखा ।

राजकर्मचारी चौंक उठे कि ऐसे आदमी को राजा ने अमलदार क्यों बना दिया । कुछ भी हो, राजा से प्रषित अधिकार-पत्र था, इस लिए नए अमलदार बने गुंडप्पा को बाजे-गाजे के साथ धूमधाम से नगर में ले चले वे अधिकारी । उस गौरव पर गुंडप्पा

ख़ुशी से फूलकर कुप्पा हो गया था ।

अमलदार के नीचे रहनेवाले किसी अधिकारी के घर नए अमलदार गुंडप्पा को खाना खिलाया गया । सुबह से गुंडप्पा ने न कुछ खाया, न कुछ पिया । इस लिए गुंडप्पा ने पेट भर खाना खा लिया । फिर उस ने उस अधिकारी से पूछा, "खाना अच्छा है! तांबूल है कहाँ?"

उस अधिकारी ने तांबूल मंगवाकर, गुंडप्पा को अदब के साथ दे दिया ।

तांबूल लेते वक़्त अपनी आदत के मुताबिक गुंडप्पा ने पूछा, "सिर्फ़ तांबूल? दक्षिणा है कहाँ?"

वह अधिकारी नहीं जानता था कि गुंडप्पा पहिले था एक पुरोहित और तांबूल-दक्षिणा लेने की उस की थी आदत । इस लिए उसने सोचा कि नया अमलदार आते ही मांग रहा है रिश्वत । इस लिए अपने कमरे में जाकर, एक थैली में पाँच सौ अशर्फियाँ भरकर ले आया और नए अमलदार के हाथ थाम दी ।

एक-दो की जगह पाँच सौ अशर्फियों को पाकर नया अमलदार हुआ सचमुच बहुत ख़ुश, फिर कहा, "ठीक है, मैं थोड़ी देर में आ जाऊँगा । इस बीच तुम लोग अपने-अपने काम करते रहो ।"

इस पर सभी अधिकारी कार्यालय में चले गये । नया अमलदार गुंडप्पा याद करने लगा राजा की दी हुई सूचनाएँ, ताकि उन को तुरंत अमल में लाया जाए । उस ने राजा की कही सूचनाओं को समझने की कोशिश नहीं की । उसने सोचा, राजा के कहने के अनुसार खुद को मुंह काला करना चाहिए । मगर कैसे, यह उस की समझ में नहीं आया । इस लिए एक उपाय कर लिया, काजल मंगाकर अपने मुंह पर लगा के अपना मुंह काला कर लिया था नए अमलदार गुंडप्पा ने । वैसे ही वह कार्यालय में चला आया था । सभी कर्मचारी इस रूप को देखकर काफी घबड़ा गये थे । हलचल हुई । लाचार होकर वे चुप रह गये । आख़िर ये हरकतें करनेवाला आम कर्मचारी नहीं, वह इस जिले का ही एक बड़ा अधिकारी अमलदार था ।

राजा की दूसरी सूचना थी-दूसरों के कान ऐंठना । नए अमलदार गुंडप्पा ने एक कर्मचारी को अपने पास बुलाया । उस

कर्मचारी को नहीं मालूम था कि आखिर अमलदार क्यों बुला रहा है अपने को। चुपचाप वह गुंडप्पा के पास चल दिया। इस पर उसे और पास बुलाया था गुंडप्पा ने। उस कर्मचारी ने सोचा कि नया अमलदार कोई राज़ कहेगा खुद को, इस लिए उस के और पास वह चल दिया।

इस पर नए अमलदार ने उस कर्मचारी का कान ऐंठ दिया। कर्मचारी पीड़ा से खाने लगा। लोगों ने सोचा, उस कर्मचारी ने कोई गलती की जिस पर नए अमलदार ने यूँ उसे दण्ड दिया है।

अब राजा की एक और सूचना शेष रह गई थी कि दूसरों की चुटिया अपने हाथों में लेनी चाहिए। इसी के वास्ते अब अमलदार बने गुंडप्पा के मन में उठने लगे अनेक विचार।

अमलदार बैठा ही रहा, इस लिए दूसरे कर्मचारी भी अपनी अपनी जगहों में बैठे ही रहे। शाम हुई। रात भी हुई। लेकिन गुंडप्पा अपनी जगह से नहीं उठा। इस वजह से उस के कर्मचारी भी नहीं उठे। उन्हें नींद आने लगी। बहुत कोशिश करके भी वे अपनी नींद रोक नहीं सके।

आधी रात हुई। सभी अपनी-अपनी जगहों में सो रहे थे। गुंडप्पा जो सोच रहा था राजा की तीसरी सूचना का अमल करने के लिए, उठा धीरे से। हाथ में एक कैंची लेकर एकेक कर्मचारी के पास गया, उन की चोटियाँ कतरने लगा। इस तरह दूसरों की चुटिया अपने हाथों आने पर नए आये अमलदार ने राहत की साँस ली।

गुंडप्पा ने सोचा, राजा की सूचनाओं के मुताबिक चली अपने पहले दिन की अमलदारी के बारे में राजा सुनेंगे तो हो जाएँगे बहुत ख़ुश। इस लिए दूसरे दिन सुबह ही गुंडप्पा चल दिया राजधानी की ओर।

गुंडप्पा के मुंह सारी बातें सुनकर राजा चौंक पड़े। उसी वक़्त देवगिरि से एक अधिकारी आया और राजा से नए अमलदार की कारतूतों के बारे में बता दिया। इस पर राजा ने अपनी भूल पहचान ली, फिर गुंडप्पा को राज-पुरोहित बना दिया।

शीतल वायुमंडल के पीछे ठंडी शुष्क हवा जब गरम तर हवा से ठकरा जाएगी, तब बादल उपजकर, उमड़ घुमड़कर आ जाएँगे । बादलों में रहा अल्पपीडन जब बादलों को जमा देगा, तब उन के बीच सुरंगों के जैसे छेद पड़ जाते हैं । ये जब धारती से छूने लगेंगे, तब चक्कर काटते हुए भयानक तूफानी हवाएँ चलेंगी । हवाएँ १३२० फुट की चौड़ाई से प्रति घंटे ३०० मील की रफ्तार से चलती रहेंगी । अमरीका के मध्य पश्चिम प्रांत में हर साल १५० आंधियाँ चलती हैं । सन् १९६५ में यहाँ के तूफ़ान में २०० लोगों की मौत हुई थी । रूस और अफ्रीका के कुछ प्रांत भी इस तबाही से बच नहीं सके ।
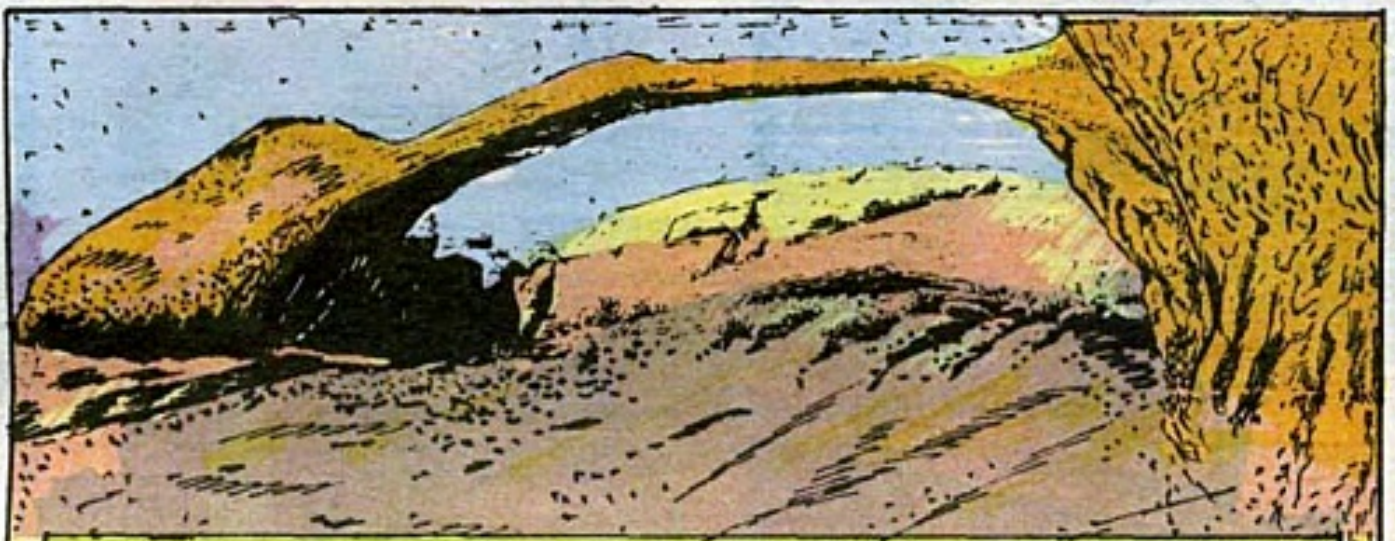
अमरीका के उटा में स्थित नेशनल पार्क में रहा शिला वृत्तखण्ड ही है विश्व भर का बहुत बड़ा प्राकृतिक शिला वृत्तखण्ड । इस की लंबाई है २९१ फुट । इसी पार्क में कुछ और सहज शिला वृत्तखण्ड हैं । ये सभी हैं करीब १५ करोड़ साल पूर्व के बने प्रकृति के अजूबे । रेतीले पत्थरों की दरारों में बारिश का पानी जब उतरेगा, तब ये दरारें फैल जाती हैं । हवा और बर्फ़ धीरे-धीरे उन दरारों को मिटा देती हैं जिस से छेद पड़ जाते हैं वहाँ और बन जाते हैं शिला वृत्तखंड । वक़्त के साथ ये शिला वृत्तखंड घिसते ही जाते हैं, चुनांचे एक न एक दिन ये शिला वृत्तखण्ड टूट जाएँगे अवश्य ।

FIRE ENGINE (FRICTION)

SUPER DUMPER (FRICTION)

WRECKER (FRICTION)

ZAP GUN (ELECTRONIC)

HELICOPTER (WIND-UP)

CHANDAMAMA TOYTRONIX

WOBBIT
Ht: 13.5 inches

JUMBO
Ht: 7 inches

BOW WOW
Ht: 6 inches

PAPA HARE
Ht: 6 inches

TEDDY
Ht. 10.5 inches

NOW AVAILABLE*

Every toy in the Cuddles Collection is made to the standards set by our collaborators.

High quality synthetic fur used for the stuffing ensures the toys stay cuddly for years. Every Cuddles' fur is made of material with fast colours. The cute little eyes and nose are made of non-toxic plastic and are secured firmly to withstand child-handling.

The Sammo range of mechanical toys too are made to exacting standards set by Sammo Corporation of S. Korea, one of the leading toy manufacturers in the world.

Toys crafted to look like the real thing. With dynamic crackling sounds; glossy, non-fading colours.

Neatly and attractively packed to please the child and the parent.

Every little detail has been taken care of to ensure the child's safety and customer satisfaction.

Whether it is the children who play with Cuddles and the Sammo toys or the parents who buy them, these toys will keep everybody smiling.

*in leading toys shops in Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala, Tamil Nadu and Bombay only

INTRODUCTORY OFFER
One set of stickers and entry form to the 'CHANDAMAMA CUDDLES-SAMMO Contest' inside every carton.

CHANDAMAMA COLLECTION

CUDDLES

In collaboration with Sammo Corporation, S.Korea

Chandamama Toytronix Private Limited,
Chandamama Buildings,
188, NSK Salai, Vadapalani, Madras-600 026.

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अगस्त १९९० के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

M. C. Morabad

G. Prabhakar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ जून १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अप्रैल की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : संगीत लहरी!

द्वितीय फोटो : सजग प्रहरी!!

प्रेषक : हरिकिसन स्वामी, २६६०/७ ए, फरीदाबाद (हर्याना)

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA (Hindi) June 1990 Regd. No. M. 5452